हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, 29 जून 2025

11 पौने तीन करोड़ की लागत से चकाचक होगा शहीदी पार्क...

12 श्रद्धालुओं में भगवान का रथ खींचने की मची होड़

खबर संक्षेप

कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा आज शहर में

झज्जर। लोक निर्माण (भवन एवं सड़क) तथा जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा रविवार को झज्जर दौरे पर रहेंगे। इस संबंध में जानकारी देते हुए उनके निजी सचिव अरुण कुमार ने बताया कि कैबिनेट मंत्री सांय चार बजे शहर के पीडब्ल्यूडी विश्राम गृह पहुंचेंगे, जहां वह गुरु दक्ष प्रजापति समाज की सार्वजनिक बैठक को संबोधित करेंगे। इसके उपरांत विश्राम गृह में ही सांय साढ़े चार बजे कैबिनेट मंत्री प्रेस कॉन्फ्रेंस को भी संबोधित करेंगे।

सुबह धूप और दोपहर बाद छा गए बादल

बहादुरगढ़। शनिवार की सुबह इलाके में तेज धूप निकली लेकिन दोपहर होते होते मौसम बदल गया। दोपहर बाद आसमान में बादल छाए गए। कुछ मिनट के लिए बूंदाबादी भी हुई, लेकिन तेज बरसात नहीं हो सकी। शाम तक आसमान में बादल छाए हुए थे। बरसात की संभावना बनी हुई थी। इस बदलाव के चलते तापमान में काफी गिरावट आई। शाम को उमस भरी गर्मी से काफी राहत मिली। बता दें कि बीते चंद दिनों से आसमान में रह रहकर बादल छा रहे हैं। बरसात के आसार बनते हैं लेकिन होती नहीं है।

किसान चौक के निकट व्यक्ति का शव मिला

बहादुरगढ़। जाखोदा बाईपास पर किसान चौक के निकट सड़क पर एक व्यक्ति का शव मिला। मौत का कारण स्पष्ट नहीं है और मृतक की पहचान भी नहीं हो सकी है। पुलिस ने शव को नागरिक अस्पताल में रखवा दिया है। घटना शुक्रवार शाम की है। दरअसल, जाखोदा बाईपास पर सड़क किनारे एक व्यक्ति मृत अवस्था में था। किसी की नजर पड़ी तो पुलिस को सूचना दी गई। आसौदा थाने से पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। आसपास लोगों से पूछताछ की लेकिन पहचान नहीं हो सकी। न ही पहचान संबंधित कोई दस्तावेज मृतक के कपड़ों से बरामद हुआ। जांच अधिकारी देवेंद्र सिंह का कहना है कि मृतक की उम्र करीब 55 वर्ष आंकी जा रही है। किसी बीमारी से मौत की आशंका है।

राजकीय नेहरू कॉलेज में पहली मेरिट लिस्ट के 93 विद्यार्थियों ने कराई फीस जमा

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

विभिन्न कॉलेजों की बीए, बीएससी, बीकॉम, बीसीए और बीबीए आदि स्नातक कक्षाओं की पहली मेरिट लिस्ट के दाखिले चल रहे हैं। फीस जमा करवाने की अंतिम तिथि 30 जून है। राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉक्टर अमित भारद्वाज ने बताया कि फीस डेबिट या क्रेडिट कार्ड के माध्यम से ऑनलाइन भरी जा सकती है। फीस भरने के लिए विद्यार्थियों को उच्चतर शिक्षा विभाग के प्रवेश पोर्टल पर लॉग इन करना होगा। फीस भरने के बाद विद्यार्थियों को अपने दस्तावेजों की जांच के लिए कॉलेज में उपस्थित होना पड़ेगा।

डॉ. अमित भारद्वाज ने बताया कि नेहरू कॉलेज में विभिन्न कक्षाओं में अब तक 93 विद्यार्थियों ने ऑनलाइन फीस जमा करवाई है। इनमें बीए के 52, बीएससी फिजिकल साइंस के सात, बीएससी लाइफ साइंस के चार, बीएससी गणित के चार, बीकॉम के पांच, बीसीए के 16 तथा बीबीए के पांच विद्यार्थियों ने फीस जमा करवाई है। शनिवार को भी कई विद्यार्थी दाखिले की प्रक्रिया के बारे में जानकारी लेने के लिए कॉलेज में उपस्थित हुए।

बता दें कि राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय, झज्जर में बीए की 480, बीकॉम की 140, बीएससी फिजिकल साइंस की 300, बीएससी लाइफ साइंस की 80, बीएससी गणित की 40, बीबीए की 80 तथा बीसीए की 80 सीटें हैं। जिन विद्यार्थियों का नाम मेरिट लिस्ट में आया है और वे एडमिशन लेने के इच्छुक हैं, उनके सभी प्रमाण-पत्रों की कॉलेज में जांच होगी और उनको अपने प्रमाण-पत्रों की फोटोकॉपी कॉलेज में जमा करवानी होगी। इसलिए विद्यार्थी अपने ऑनलाइन एडमिशन फॉर्म की हार्ड कॉपी, फोटोग्राफ, सभी मूल प्रमाण पत्र और उनकी फोटोकॉपी साथ लेकर आएं।

झज्जर। नेहरू कॉलेज परिसर में दाखिले के लिए दस्तावेजों की जांच करवाते हुए विद्यार्थी।

दूसरी मेरिट लिस्ट तीन को

डॉ. अमित भारद्वाज ने बताया कि दूसरी मेरिट लिस्ट तीन जुलाई को जारी होगी। ओपन काउंसलिंग नौ जुलाई से शुरू होगी। खाली सीटों को भरने के लिए एडमिशन पोर्टल भी दस जुलाई को दोबारा खुलेगा।

1200 सीटों के लिए आए 1567 आवेदन

डॉ. अमित भारद्वाज ने बताया कि नेहरू कॉलेज में यूजी कक्षाओं की 1200 सीटों के लिए 1567 आवेदन किए गए थे। इन सीटों पर दाखिलों के लिए उच्चतर शिक्षा विभाग ने वीरवार को 556 विद्यार्थियों की पहली मेरिट लिस्ट जारी की थी। इनमें बीए के 272, बीएससी फिजिकल साइंस के 42, बीएससी लाइफ साइंस के 50, बीएससी गणित के 33, बीकॉम के 30, बीसीए के 74 तथा बीबीए के 55 विद्यार्थियों की जारी की गई थी।

बीएससी नर्सिंग के फाइनल ईयर का स्टूडेंट था मृतक हेमंत

अज्ञात वाहन की टक्कर से छात्र की मौत

- मोटरसाइकिल पर गांव जाते समय हुआ हादसा
- अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

शहर के कोसली मार्ग स्थित फ्लाई ओवर पर अज्ञात वाहन की टक्कर से मोटरसाइकिल सवार एक युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान रेवाड़ी जिले के लूला अहीर गांव निवासी करीब 22 वर्षीय हेमंत पुत्र सतेंद्र के तौर पर हुई है। हेमंत छुछकवास के एक निजी संस्थान में बीएससी नर्सिंग के फाइनल इयर का विद्यार्थी था। वह शहर में ही किराए के मकान में रहता था। शनिवार की सुबह जब वह मोटरसाइकिल पर सवार होकर अपने घर जा रहा था सुबह करीब नौ बजे उसे एक तेज रफ्तार वाहन ने टक्कर मार दी। जिसके कारण वह गंभीर रूप से घायल हो गया। इसके बाद घायल हेमंत को उपचार के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मामले के जांच अधिकारी पवन कुमार ने बताया कि उन्हें कोसली फ्लाईओवर पर हुए एक्सीडेंट में युवक की मौत की सूचना मिली थी। इसके बाद उन्होंने मौके पर पहुंच कर घटनास्थल का जायजा लिया। इस मामले में मृतक हेमंत के साथी कुणाल की शिकायत पर अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस को दी शिकायत में मृतक के साथी लूला अहीर गांव निवासी कुणाल पुत्र ललित कुमार ने बताया कि शनिवार की सुबह करीब नौ बजे वह तथा उसका दोस्त हेमंत अपनी-अपनी मोटरसाइकिलों पर गांव जाने के लिए निकले थे। जैसे ही वे कोसली मार्ग के फ्लाईओवर पर पहुंचे तो सामने से आ रही एक तेज रफ्तार गाड़ी ने हेमंत की मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। टक्कर मारने के बाद गाड़ी चालक अपनी गाड़ी को लेकर मौके से भाग निकला। इसके बाद वह उसे राहगीरों की सहायता से हेमंत को उपचार के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल लेकर पहुंचा जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इस संबंध में पुलिस द्वारा शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।

झज्जर। नागरिक अस्पताल परिसर में उपस्थित परिजन और पुलिसकर्मी। फोटो : हरिभूमि

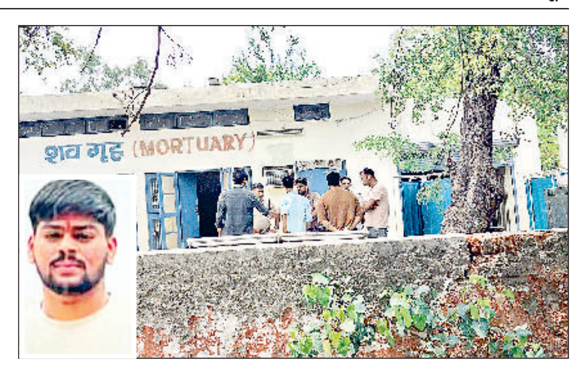

झज्जर। बेटे की मौत की खबर सुनकर अस्पताल परिसर में बेहोश हेमंत के पिता व पोस्टमार्टम के दौरान शवगृह परिसर में उपस्थित परिजन एवं पुलिसकर्मी तथा (इनसेट में) मृतक हेमंत का फाईल फोटो। फोटो : हरिभूमि

बेटे की मौत की खबर सुनकर पिता का रो-रोकर बुरा हाल

एक्सीडेंट की सूचना मिलने के बाद जब हेमंत के पिता अपने परिवारजनों के साथ अस्पताल पहुंचे और उन्हें अपने लाडले की मौत का पता चला तो वे थोड़ी देकर के लिए बेहोश हो गए। परिवार के अन्य सदस्य उन्हें ढांढस बंधाते रहे लेकिन वे बीच-बीच में अपनी सुध खौ बैठते थे। इस हृदय विदारक घटना को सुनकर थोड़ी देर के लिए अस्पताल परिसर में भी मायूसी छा गई।

बहादुरगढ़। कॉलेज में परिवार के साथ दाखिले के लिए पहुंची एक छात्रा।

कॉलेजों में रविवार को भी होंगे दाखिले

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

कॉलेजों में दाखिला प्रक्रिया जारी है। स्नातक प्रथम वर्ष में प्रवेश के लिए उच्चतर शिक्षा विभाग ने गुरुवार दोपहर पहली सूची जारी कर दी थी। वैश्य कन्या महाविद्यालय दाखिले के लिए रविवार को भी खुला रहेगा।

वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने बताया कि प्रथम मेरिट सूची में जिन छात्राओं के नाम आए हैं, वे महाविद्यालय में आकर अपने दस्तावेज वेरिफाई कर फीस ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन तरीके से भरकर अपनी सीट सुनिश्चित कर रही हैं। यदि छात्राएं निर्धारित समय में फीस नहीं भरती हैं तो उनकी सीट रद्द मानी जाएगी। दस्तावेजों का सत्यापन महाविद्यालय में ऑफलाइन चल रहा है।

एडमिशन नोडल ऑफिसर डॉ. नेहा नैन ने बताया कि दूसरी प्रोविजनल मेरिट लिस्ट दो जुलाई व फाइनल मेरिट लिस्ट तीन जुलाई को उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा जारी कर दी जाएगी। प्रथम मेरिट सूची में स्थान पाने वाली छात्राएं रविवार यानी 29 जून को भी दस्तावेजों के साथ महाविद्यालय में आकर फीस भर कर दाखिला पा सकती हैं। महाविद्यालय सुबह 10 बजे से दोपहर तीन बजे तक दाखिला प्रक्रिया के लिए खुला रहेगा। यदि किसी छात्रा को प्रथम मेरिट लिस्ट के अनुसार दाखिला नहीं लेना तो उनको उच्चतर शिक्षा विभाग की वेबसाइट पर लॉगिन करके डेफर का ऑप्शन जरूर करना होगा।

झज्जर। राजकीय नेहरू कॉलेज परिसर में सीएम का पुतला फूंकते हुएए एनएसयूआई संगठन के पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

एनएसयूआई ने सीएम का पुतला फूंका

झज्जर। शनिवार को हिसार कृषि विश्वविद्यालय में आंदोलनरत छात्रों के समर्थन में एनएसयूआई संगठन ने राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय में सीएम नायब सिंह सैनी का पुतला फूंका और सरकार विरोधी जमकर नारेबाजी की। उन्होंने कृषि विश्व विद्यालय हिसार के वीसी को हटाने की मांग की। एनएसयूआई के अध्यक्ष अविनाश यादव ने इस मामले में सरकार की कार्रवाई को गलत बताया और कहा कि सरकार जानबूझ कर आंदोलनरत छात्रों के साथ अत्याचार कर रही है। उन्होंने कहा कि हिसार कृषि विश्वविद्यालय में छात्रों की ओर से स्कॉलरशिप की मांग को लेकर धरना दिया गया था। उस दौरान रजिस्ट्रार की मौजूदगी में प्रोफेसर और सिक्योरिटी गार्ड द्वारा छात्रों पर बुरी तरह से पीटा गया था। छात्रों की मांग है कि वीसी को हटाया जाए। लेकिन सरकार ऐसा नहीं कर रही है। जिसके कारण छात्रों में रोष बन रहा है। उन्होंने कहा कि अगर सरकार जल्द छात्रों की मांग पूरी नहीं करती है तो आंदोलन तेज किया जाएगा। जिसकी जिम्मेवारी सरकार की होगी।

वर्ल्ड मिलिट्री चैंपियनशिप में सुमित दलाल ने जीता गोल्ड मेडल

बहादुरगढ़। मांडोठी का पहलवान सुमित दलाल विश्व स्तर पर लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। अब उसने जर्मनी में आयोजित वर्ल्ड मिलिट्री रेसलिंग चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीत लिया है। बीते आठ दिन में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुमित का यह दूसरा गोल्ड मेडल है। उसकी जीत पर परिजन व कुश्ती प्रेमी गदगद हैं। स्वदेश लौटने पर अखाड़े में साथी पहलवानों द्वारा उसका जोरदार अभिनंदन किया जाएगा।

दरअसल, इंटरनेशनल मिलिट्री स्पोर्ट्स काउंसिल की ओर से 22 से 29 जून तक जर्मनी में वर्ल्ड मिलिट्री कुश्ती चैंपियनशिप का आयोजन किया जा रहा है। दुनियाभर की सेनाओं के पहलवान इसमें भाग ले रहे हैं। भारतीय सेना की ओर से हिंद केसरी सोनू अखाड़े के पहलवान सुमित दलाल ने जोर आजमाइश की। सुमित ने 60 केजी ग्रीको रोमन में दमदार खेल दिखाते हुए गोल्ड पर कब्जा जमाया। कोच धर्मेंद्र दलाल ने कहा कि सुमित बेहद होनहार पहलवान है।

मिलिट्री वर्ल्ड चैंपियनशिप में ग्रीको वर्ग में गोल्ड मेडल जीतने वाला वह पहला पहलवान है। पिछले सप्ताह वियतनाम में हुई एशियन चैंपियनशिप में भी सुमित ने गोल्ड मेडल जीता था। वह लगातार अपने बेहतर प्रदर्शन से देश का नाम रोशन कर रहा है।

इससे पहले वह वर्ल्ड चैंपियनशिप में तीन बार मेडल जीत चुका है। एशियन चैंपियनशिप में भी मेडल जीते हैं। जब भी विदेश खेलने जाता है तो मेडल जीतकर ही लौटता है। अखाड़े में लौटने पर उसका जोरदार सम्मान किया जाएगा।

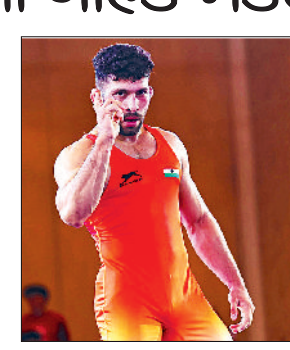

- सुमित ने आठ दिन के अंदर विश्व स्तर पर दो मेडल जीते

बहादुरगढ़। पहलवान सुमित दलाल।

गांजे सहित आरोपी को किया गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

स्पेशल स्टाफ झज्जर की एक टीम ने बहादुरगढ़ इलाके में गांजे सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ सिटी थाने में केस दर्ज किया गया है। स्पेशल स्टाफ प्रभारी राजेश कुमार के अनुसार, उन्हें सूचना मिली थी कि बिहार मूल का भरत गिरी यहां लाइनपार में रहता है। नशीले पदार्थ की तस्करी करता है। फिलहाल नशीला पदार्थ बेचने की मंशा से सरकारी अस्पताल के पास गली में मौजूद है। इस पर टीम वहां गई और उसे काबू किया। राजपत्रित अधिकारी की मौजूदगी में तलाशी लेने पर उसके पास 280 ग्राम गांजा मिला।

विधायक राजेश जून ने सड़क के निर्माण कार्य का किया शुभारंभ

कुलासी गांव में 39.50 लाख की लागत से बनेगी सड़क

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

विधायक राजेश जून ने शनिवार को कुलासी गांव में ग्राम वासियों व अधिकारियों की मौजूदगी में कुलासी से किडौली प्रहलादपुर तक बनने वाली सड़क के निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। सड़क निर्माण कार्य का शुभारंभ करने पहुंचे विधायक राजेश जून का ग्राम वासियों ने फूलमालाएं पहनाकर स्वागत किया।

करीब तीन किलोमीटर लंबे इस लिंक रोड के निर्माण पर 39 लाख 50 हजार रुपये की लागत आनी है। विधायक राजेश जून ने ठेकेदार को निर्देश देते हुए कहा कि इस सड़क के निर्माण कार्य में लगने वाली निर्माण सामग्री की गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखें। किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। विधायक राजेश जून ने मौके पर मौजूद ग्राम वासियों से भी अपील करते हुए कहा कि सड़क के निर्माण कार्य पर अपनी अपनी निगरानी रखें।

अगर किसी तरह की लापरवाही या खामी नजर आए तो तुरंत मुझे या मेरे कार्यालय में सूचना दें। जून ने लोगों से आह्वान करते हुए कहा कि विकास कार्य पूरी गुणवत्ता से हो सके, इसलिए हमें विकास कार्य की निगरानी करके हम सबको अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। इस अवसर पर एसडीओ यादविंदर, जेई निशांत के अलावा कई कार्यकर्ता व ग्रामवासी मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। कुलासी में सड़क निर्माण कार्य का शुभारंभ करते विधायक राजेश जून। फोटो : हरिभूमि

स्मॉलकैप कंपनियां फिर उड़ान भरने को तैयार, दे सकती है अच्छा मुनाफा

● लंबी अवधि के निवेश का लक्ष्य बनाकर लगाएं पैसा ● पिछले माह निफ्टी स्मॉलकैप 100 में 14.7% में तेजी ● अब स्मॉलकैप में निवेश का हो सकता है सही वक्त ● 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर

स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जिनका मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होता है, आमतौर पर ये नए या छोटे व्यवसाय होते हैं, जिनमें विकास की गुंजाइश अधिक होती है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है। सेबी के अनुसार, स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जो मार्केट कैपिटलाइजेशन के मामले में 251वें स्थान से नीचे आती हैं।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

बाजार के परिदृश्य को देखते हुए स्मॉलकैप कंपनियां एक बार फिर उड़ान भरने के लिए तैयार हैं। ये कंपनियां लंबी अवधि में निवेशकों को अच्छा मुनाफा दे सकती हैं। जो लोगों को मालामाल कर देगीं। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले महीने भारतीय शेयर बाजार में स्मॉलकैप शेयरों ने जबरदस्त तेजी दिखाई, जबकि निफ्टी 50 केवल मामूली बढ़ा। मार्च तिमाही के नतीजों से पता चला कि 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर हुई है। 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से भी स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान मिल रही है, जो लंबी अवधि के निवेशकों के लिए सुनहरा मौका है। पिछला महीना भारत की अर्थव्यवस्था के लिए काफी अच्छा रहा। वैश्विक चुनौतियों और सीमा-पार तनावों के बावजूद मई महीने में भारतीय शेयर बाजारों ने तेज रिकवरी दिखाई। शेयर बाजारों में जहां एक ओर लार्जकैप इंडेक्स सीमित दायरे में घूमते रहे, वहीं असली हलचल स्मॉलकैप शेयरों में दिखी। ये छोटी कंपनियां उन निवेशकों के लिए सुनहरा मौका बन रही हैं, जो लंबी अवधि के लिए पोर्टफोलियो बनाना चाहते हैं।

स्मॉलकैप कंपनियों की विशेषताएं

- **उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न :** स्मॉलकैप कंपनियों में निवेश करने से उच्च रिटर्न मिल सकता है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है क्योंकि इन कंपनियों का भविष्य अनिश्चित हो सकता है।
- **नए और छोटे व्यवसाय :** स्मॉलकैप कंपनियां अक्सर नए और छोटे व्यवसाय होते हैं जो अपने उत्पादों या सेवाओं को बाजार में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।
- **विकास की गुंजाइश :** स्मॉलकैप कंपनियों में विकास की गुंजाइश अधिक होती है, जिससे निवेशकों को आकर्षित किया जा सकता है।
- **कम तरलता :** स्मॉलकैप कंपनियों के शेयरों में तरलता कम हो सकती है, जिससे निवेशकों को अपने शेयर बेचने में कठिनाई हो सकती है।

बढ़ रहा रिटर्न

मार्च तिमाही के नतीजों के बाद एक अहम ट्रेंड सामने आया- टॉप 250 स्मॉलकैप कंपनियों में से 74% का रिटर्न ऑन कैपिटल एम्प्लॉइड दो अंकों में रहा। इसका मतलब यह है कि ये कंपनियां न केवल मुनाफा कमा रही हैं, बल्कि इनकी ऑपरेशनल एफिशिएंसी भी बेहतर हो रही है। इससे निवेशकों में स्मॉलकैप के प्रति भरोसा पैदा होगा और एक बार फिर निवेशक इन फंडों में निवेश कर अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकेंगे।

स्मॉलकैप में निवेश का बढ़ता मौका

फिलहाल देखा जाए तो वैल्यूएशन की दृष्टि से बाजार में अभी एक अच्छा मौका है। बहुत सारे छोटे कंपनियों के शेयर अपने असली दाम से काफी सस्ते मिल रहे हैं। इसका मतलब है कि आप अच्छे बिजनेस वाले शेयर कम कीमत में खरीद सकते हैं। स्मॉलकैप शेयरों को ज्यादा जोखिम और ज्यादा मुनाफा वाली प्रोफाइल के लिए जाना जाता है, इसलिए इन्हें अक्सर कम रिस्क लेने वाले निवेशकों की पोर्टफोलियो में नजरअंदाज किया जाता रहा है, लेकिन अब इस सोच में बदलाव आ रहा है। जब बाजार में उतार-चढ़ाव कम हो रहा है, तो निवेशकों का रुख भी पॉजिटिव हो रहा है और वे ज्यादा जोखिम उठाने को तैयार हैं। यह बदलाव व्यापक सूचकांकों में भी दिखा है। जहां पिछले महीने निफ्टी 50 ने केवल 2.6% की मामूली बढ़त दर्ज की, वहीं निफ्टी स्मॉलकैप 100 ने प्रभावशाली 14.7% की तेजी दिखाई है।

लंबी अवधि में जबरदस्त मुनाफे के मौका

स्मॉलकैप यानी छोटी कंपनियों के शेयर, लंबे समय में बहुत अच्छा रिटर्न दे सकते हैं। पिछले 7 सालों में इन कंपनियों ने औसतन हर साल करीब 27.6% का मुनाफा दिया है, जो बड़ी कंपनियों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। इन कंपनियों का दायरा भी काफी बड़ा होता है। ये बैंकिंग, हेल्थकेयर, एफएमसीजी और पावर जैसे कई सेक्टरों में ये फैली होती हैं। इसका मतलब है, आपको निवेश के लिए अलग-अलग इंडस्ट्री में मौके मिलते हैं।

'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान

ग्लोबल स्तर पर देखें तो भारत को 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी का बड़ा फायदा मिल रहा है। इस स्ट्रेटजी के तहत कई मल्टीनेशनल कंपनियां अपनी मैन्युफैक्चरिंग भारत की तरफ शिफ्ट कर रही हैं। इससे देश में इंडस्ट्रियल ग्रोथ तेज होगी और खासतौर पर स्मॉलकैप मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों को स्केलेबिलिटी और विस्तार का बड़ा मौका मिलेगा। आज के बदलते बाजार में स्मॉलकैप शेयर निवेशकों को एक अलग तरह का एक्सपोजर देते हैं। जहां कम कीमत पर निवेश के साथ कमाई की बड़ी संभावना होती है जो लोग लंबी अवधि के लिए निवेश सोच रहे हैं और थोड़ा रिस्क लेने को तैयार हैं, उनके लिए यह वक्त स्मॉलकैप में निवेश बढ़ाने और पोर्टफोलियो को मजबूत करने का सही मौका है।

पांच साल के रिटर्न चार्ट पर स्मॉलकैप फंड सबसे आगे

टॉप 25 में 13 स्कीम ने 33 से 38% सालाना मिला रिटर्न दिया, म्यूचुअल फंड में स्मॉलकैप कैटेगरी हाई रिटर्न का बेहतर विकल्प है, निवेश के लिए लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल का रखना होना जरूरी

रिटर्न
बिजनेस डेस्क

यदि आप भी निवेश कर रहे हैं या करने जा रहे हैं तो म्यूचुअल फंड की स्मॉलकैप कअेगरी आपके लिए निवेश का बढ़िया विकल्प साबित हो सकती है। इसके लिए आपको थोड़ा सयंम के साथ निवेश का लक्ष्य तय करना होगा। इस श्रेणी में अच्छा रिटर्न लेने के लिए आपको निवेश का लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल को लेकर चलना होगा। फाइनेंशियल एडवाइजर्स की यह सलाह रिटर्न चार्ट देखकर बिल्कुल सही साबित होती है। बीते 5 साल या 60 महीनों के दौरान रिटर्न के मामले में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले म्यूचुअल फंड स्कीम पर नजर डालें तो स्मॉलकैप फंड्स ने बाजी मार ली है। 5 साल के टॉप 25 स्कीम में 13 स्कीम स्मॉलकैप फंड कैटेगरी की हैं, जिनमें 33 से 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न मिल रहा है। 5 साल में 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह रिटर्न करीब 5 गुना होता है। यानी 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 5 गुना बढ़ा दिया। वहीं, 33 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह करीब 4 गुना रिटर्न होगा। इसका मतलब है कि 33 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 4 गुना बढ़ा दिया।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड टॉपर

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ न सिर्फ स्मॉलकैप कैटेगरी का बल्कि ओवरआल भी टॉपर रहा है। इस फंड ने 5 साल में 1 लाख का निवेश 5 लाख रुपये बना दिया। इसके बाद बेहतर प्रदर्शन करने वाली टॉप 5 में शामिल अन्य स्कीम बंधन स्मॉलकैप फंड ने 37.32% एनुअलाइज्ड रिटर्न, बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड ने 36% एनुअलाइज्ड रिटर्न, इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड ने 35.50% एनुअलाइज्ड रिटर्न और एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड ने 35.35% रिटर्न दिया है।

ये हैं 5 साल के टॉप 13 फंड

1. **निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड : 38%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.50% सालाना रहा है. फंड का लेटेस्ट एयूएम 63,007 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.65% है।
2. **बंधन स्मॉलकैप फंड : 37.32%**
ये स्कीम 25 फरवरी 2020 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 35.23% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 11,744 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.39% है।
3. **बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड : 36%**
ये स्कीम 19 दिसंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 28.40% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 1,819 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.53% है।
4. **इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड : 35.50%**
ये स्कीम 7 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 27.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 4,580 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.43% है।
5. **एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड : 35.35%**
ये स्कीम 12 मई 2014 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 21.12% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 16,061 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.63% है।
6. **टाटा स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 12 नवंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.31% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 10,529 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.34% है।
7. **इन्वेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 30 अक्टूबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.74% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 6,823 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.44% है।
8. **केनरा रोबोको स्मॉलकैप फंड : 34.80%**
ये स्कीम 15 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.64% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 12,368 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.47% है।
9. **एचडीएफसी स्मॉलकैप फंड : 34.33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 34,032 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
10. **कोटक स्मॉलकैप फंड : 33.55%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20.26% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 17,329 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.55% है।
11. **आईसीआईसीआई प्रू स्मॉलकैप फंड : 33.17%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 17.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 8,254 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
12. **सुंदरम स्मॉलकैप फंड : 33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 18.72% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 3,311 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.86% है।
13. **एलआईसी एमएफ स्मॉलकैप फंड : 32.65%**
ये स्कीम 21 जून 2017 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 16.13% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 576 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.92% है।

फाइनेंशियल एडवाइजर्स भी बोले, लक्ष्य तय कर लंबी अवधि के लिए निवेश करें, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ टॉपर

ज्यादा रिटर्न के लिए लोग रिस्क लेने को तैयार, एमएफ में बढ़ रहा निवेश का क्रेज

● अब कम हो रहा बैंक एफडी का क्रेज, निवेश के नए ऑप्शन ढूंढ़ रहे लोग
● अब लोग बैंक में पैसे जमा करने के बजाय म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार में निवेश कर रहे
● यहां उन्हें ज्यादा फायदा लाभ मिल रहा, एसआईपी के जरिये निवेश ज्यादा पॉपुलर

ऑप्शन
बिजनेस डेस्क

बढ़ती महंगाई के इस जमाने में लोग निवेश के नए-नए विकल्प खोज रहे हैं। निवेशकों में बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है। यही कारण है कि बैंक एफडी की लोकप्रियता काफी कम हो रही है। भारतीय लोग अब बैंक में पैसे जमा करने के बजाय दूसरी जगहों पर निवेश कर रहे हैं। आजकल लोगों के बीच में म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार जैसी जगह निवेश के लिए ज्यादा पॉपुलर हो रही हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन जगहों पर बैंक से ज्यादा फायदा मिल रहा है। यह जानकारी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के आंकड़ों से पता चली है। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, लोगों की बैंक टर्म डिपॉजिट्स (एफडी, आरडी) में हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2020 के अंत में 50.54% थी। वित्त वर्ष 2025 के अंत में यह घटकर 45.77% हो गई। इसका मतलब है कि लोग अब बैंकों में पहले जितना पैसा जमा नहीं कर रहे हैं। वे निवेश के दूसरे विकल्पों पर ज्यादा भरोसा जता रहे हैं। चूंकि इन विकल्पों में उन्हें एफडी से ज्यादा लाभ मिल रहा है जो महंगाई को मात देने में सक्षम है। अब लोग लंबी अवधी के लिए एसआईपी के जरीये और शेयर बाजार में निवेश को ज्यादा महत्व दे रहे है। महंगाई के दौर को देखते हुए लोग अब ज्यादा रिस्क लेने को भी तैयार हैं, ताकि भविष्य के लिए कम समय में अच्छा पैसा एकत्र कर सकें। इसलिए भी निवेशकों में फिक्स डिपोजिट यानी बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है।

ब्याज दरों में हुआ बदलाव

जानकारों का कहना है कि इस दौरान ब्याज दरों में बदलाव हुआ है। रिजर्व बैंक ने कोविड महामारी के दौरान मार्च 2020 से मई 2022 के बीच प्रमुख रेपो दर को 115 बेसिस पॉइंट्स (1.15 प्रतिशत अंक) तक कम कर दिया था। फिर बाद में इसे 225 बेसिस पॉइंट्स तक बढ़ा दिया। हाल ही में, रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों को कम करना शुरू कर दिया है। उसने फरवरी में 25 बेसिस पॉइंट्स, अप्रैल में 25 बेसिस पॉइंट्स और इस महीने की शुरुआत में 50 बेसिस पॉइंट्स की कटौती की है। कुल मिलाकर, ब्याज दरें 1 प्रतिशत कम हो गई हैं। इससे भी लोगों में एफडी के प्रति रुझान कम हुआ है और लोगों ने एफडी की बजाय एसआईपी में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई है।

म्यूचुअल फंड में बढ़ी हिस्सेदारी

रिजर्व बैंक के आंकड़ों से पता चलता है कि बचत जमा में व्यक्तियों की हिस्सेदारी पिछले पांच सालों में लगभग 77% पर स्थिर रही है। इसका मतलब है कि लोग अभी भी बचत खाते में पैसा रख रहे हैं। वे म्यूचुअल फंड में भी खूब निवेश कर रहे हैं। अप्रैल तक 23 करोड़ म्यूचुअल फंड अकाउंट्स में से 91% खाते व्यक्तियों के हैं। मई 2021 में यह आंकड़ा 10 करोड़ से थोड़ा ही ज्यादा था। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है।

अलग-अलग कर रहे बचत

रिजर्व बैंक के अर्थशास्त्रियों के एक रिसर्च पेपर के अनुसार, भारतीय परिवारों की वित्तीय बचत के पोर्टफोलियो में बदलाव देखा गया है। इसका मतलब है कि लोग अब अपनी बचत को अलग-अलग जगहों पर लगा रहे हैं। बैंकों में जमा की हिस्सेदारी समय के साथ कम हुई है, जबकि इंश्योरेंस और म्यूचुअल फंड में निवेश बढ़ा है। वही लोग शेयर बाजार, गोल्ड और सिल्वर में भी निवेश को बढ़ावा देने लगे हैं।

गिरावट का कारण यह भी

एक बड़े बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री ने कहा कि जमा में गिरावट का कारण यह है कि लोगों की बचत कम हो रही है और वे शेयर बाजार जैसे अन्य निवेश विकल्पों में ज्यादा पैसा लगा रहे हैं। म्यूचुअल फंड के प्रबंधन के तहत संपत्ति 30 अप्रैल को बढ़कर 69.50 लाख करोड़ रुपये हो गई। वित्त वर्ष 2020 के अंत में यह 22.26 लाख करोड़ रुपये थी। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में लोगों का निवेश बहुत तेजी से बढ़ा है। एक अन्य बैंक के अर्थशास्त्री ने कहा कि यह बाजार की वजह से है, लेकिन जरूरी नहीं कि जनसांख्यिकी के कारण हो।

रिस्क ले रहे लोग

दिसंबर 2024 में रिजर्व बैंक के एक पेपर में कहा गया था कि बचत करने वालों का तरीका बदल रहा है। साल 2022 में 17.8% भारतीय परिवारों ने जोखिम वाली संपत्तियों में निवेश किया था। वहीं साल 2019 में यह आंकड़ा 15.7% था। जोखिम वाली संपत्तियां मतलब ऐसी जगहें जहां पैसा डूबने का खतरा होता है, जैसे कि शेयर बाजार।

क्या है एफडी में निवेश

एफडी (फिक्स्ड डिपॉजिट) में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप एक निश्चित अवधि के लिए अपने पैसे को बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान में जमा करते हैं और बदले में एक निश्चित ब्याज दर प्राप्त करते हैं।

- निश्चित आय: एफडी में निवेश करने से आपको एक निश्चित आय प्राप्त होती है जो आपके पैसे को बढ़ाने में मदद करती है।
- जोखिम मुक्त: एफडी में निवेश जोखिम मुक्त होता है क्योंकि आपका पैसा बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान के पास जमा होता है।
- लिक्विडिटी: एफडी में निवेश करने से आपको अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकालने की सुविधा होती है, हालांकि इसमें कुछ शर्तें और जुर्माना हो सकता है।
- कर लाभ: एफडी पर ब्याज आय पर कर लगता है, लेकिन कुछ प्रकार के एफडी जैसे कि टैक्स सेवर एफडी पर कर लाभ मिलता है।

एसआईपी में निवेश के लाभ

- एसआईपी में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि का निवेश म्यूचुअल फंड में करते हैं।
- नियमित निवेश: एसआईपी में निवेश करने से आपको नियमित अंतराल पर निवेश करने की आदत पड़ती है।
- रुपये कॉस्ट एवरेजिंग: एसआईपी में निवेश करने से आपको रुपये कॉस्ट एवरेजिंग का लाभ मिलता है, जिससे आपको बाजार की उतार-चढ़ाव से बचने में मदद मिलती है।
- लंबी अवधि का निवेश: एसआईपी में निवेश करने से आपको लंबी अवधि के लिए निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है।
- विविधीकरण: एसआईपी में निवेश करने से आपको विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंड में निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद मिलती है।

कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न चाहते हैं तो अपनाएं म्यूचुअल फंड्स ट्रेप्स का फंडा

- *ट्रेप्स के जरिये कर सकते हैं अच्छी कमाई, हर निवेशक रखे जानकारी*
- *यह टूल न तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है*
- *यह रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है*
- *एफएफ के लिए बेहतर रिटर्न, सुरक्षित निवेश और शानदार लिक्विडिटी*
- *ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है*

जानकारी
बिजनेस डेस्क

क्या म्यूचुअल फंड्स को कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न मिल सकता है? तो इसका जवाब है हां! ट्रेप्स (ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज) नाम के स्मार्ट टूल से म्यूचुअल फंड्स अपनी लिक्विडिटी को मैनेज करते हुए रिटर्न बढ़ाते हैं और पोर्टफोलियो को मजबूत बनाते हैं। ये टूल उन्हें न सिर्फ अपनी तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है, बल्कि रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है। ट्रेप्स की मदद से म्यूचुअल फंड्स सरकार की सिक्योरिटीज़ का सहारा लेते हुए शॉर्ट-टर्म में फंड्स खरीदने और बेचने का काम कर सकते हैं। तो चलिए, जानते हैं कि ट्रेप्स कैसे काम करता है और ये क्यों म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार टूल है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि यह सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका कैसे काम करता है और आपके निवेश को कैसे बेहतर बना सकता है।

ट्रेप्स यानी 'ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज' एक शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका है, जो निवेशकों को इस्तेमाल ना होने वाले पैसों से रिटर्न कमाना में मदद करता है। इसे खासतौर पर बैंक, फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन और म्यूचुअल फंड्स इस्तेमाल करते हैं, ताकि वो अपनी कमाई को बढ़ा सकें। ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है और फिर एक तय तारीख और कीमत पर इन्हें वापस खरीदने का समझौता करती है. ये लेन-देन सरकार की सिक्योरिटी से सुरक्षित होता है, इसलिए इसमें जोखिम कम होता है। मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड के पास ज्यादा पैसा पड़ा है और वो उसे ऐसा निवेश करना चाहता है, जिसमें लिक्विडिटी बनी रहे। तब वो उस पैसे को ट्रेप्स के जरिए निवेश कर सकता है। इस तरीके से म्यूचुअल फंड को बिना पैसा जमा किए ही ब्याज मिल जाता है और उसकी लिक्विडिटी भी बनी रहती है।

म्यूचुअल फंड्स में कैसे काम करता है ट्रेप्स

मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड को अचानक बड़े अमाउंट की जरूरत पड़ गई, जैसे कि कस्टमर्स के द्वारा पैसे निकालने के कारण। ऐसे में वह ट्रेप्स का इस्तेमाल कर सकता है। इससे उसे अपनी लंबी अवधि के इन्वेस्टमेंट्स को नुकसान में बेचने की जरूरत नहीं होती। ट्रेप्स सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड होते हैं, इसलिए ये काफी सुरक्षित माने जाते हैं। ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार तरीका है, जो उन्हें सेफ्टी, लिक्विडिटी और बेहतर रिटर्न्स का अच्छा संतुलन देता है।

ट्रेप्स के प्रमुख फायदे

- निवेशकों के लिए ज्यादा रिटर्न्स : जब बाजार में ब्याज दरें बढ़ी होती हैं, तो ट्रेप्स के जरिए म्यूचुअल फंड्स अपनी खाली पड़ी नकदी से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इसमें वह उस फंड का इस्तेमाल करते हैं, जिसे वह उस समय शेयर मार्केट में निवेश नहीं करना चाहते हैं।
- नियमों का पालन : सेबी ने यह नियम बनाया है कि म्यूचुअल फंड्स को अपनी लिक्विड एसेट का एक हिस्सा ट्रेप्स में निवेश करना होगा। इससे निवेशकों को यह भरोसा मिलता है कि उनके पैसे सुरक्षित हैं और सभी नियमों का पालन हो रहा है।
- फास्ट लिक्विडिटी : ट्रेप्स की सबसे अच्छी बात यह है कि म्यूचुअल फंड्स को जल्दी से पैसा मिल जाता है। जब किसी को पैसे की जरूरत होती है, तो ट्रेप्स से वे जल्दी नकदी ले सकते हैं।
- डायवर्सिफिकेशन : म्यूचुअल फंड्स के पोर्टफोलियो को अलग-अलग प्रकार के निवेशों में बांटना जरूरी है, ताकि जोखिम कम हो। ट्रेप्स इस डायवर्सिफिकेशन में मदद करता है और म्यूचुअल फंड्स को बाजार की उतार-चढ़ाव से बचाता है।
- ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक बेहतरीन तरीका है, जो उन्हें ज्यादा रिटर्न्स, सुरक्षित पोर्टफोलियो और पैसे की सुरक्षा देता है।

ट्रेप्स की विशेषताएं

- अल्पकालिक निवेश : ट्रेप्स अल्पकालिक निवेश विकल्प है जिसमें निवेश की अवधि आमतौर पर कुछ दिनों से लेकर कुछ महीनों तक होती है।
- सरकारी समर्थन : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको सरकारी समर्थन मिलता है, जो इसे एक सुरक्षित निवेश विकल्प बनाता है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है, जिससे आप अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकाल सकते हैं।

ट्रेप्स के लाभ

- सुरक्षित निवेश : ट्रेप्स एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकारी समर्थन होता है।
- निश्चित आय : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको निश्चित आय प्राप्त होती है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है।

खबर संक्षेप

एडवोकेट गौरव सैनी बने परिवेदना समिति के सदस्य

झज्जर। विभिन्न सामाजिक और स्वयंसेवी संस्थाओं से जुड़े एडवोकेट गौरव सैनी को जिले की परिवेदना समिति का सदस्य बनाया गया है।

गौरव सैनी इस नियुक्ति पर शहर के सैनी समाज के अलावा अन्य लोगों ने भी खुशी जताई है। अपनी नियुक्ति पर गौरव सैनी ने मुख्यमंत्री नायब सैनी, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली सहित शीर्ष नेतृत्व का आभार जताते हुए कहा कि जो जिम्मेवारी उन्हें सौंपी गई है वे उसे पूरी मेहनत और कर्तव्यनिष्ठा के साथ निभाते हुए जन समस्याओं का निदान करवाने का प्रयास करेंगे। गौरव सैनी की इस नियुक्ति पर सैनी समाज के दिलावर सिंह, दरिया सिंह, बलबीर सैनी, जगदीश, अनुज गोयल, रवि वाल्मीकि, राज सिंह, चिमन सिंह, सूरत सिंह, रॉबिन, हंसराज और धर्मवीर ने खुशी जताते हुए कहा है कि इस नियुक्ति से न सिर्फ भाजपा कार्यकर्ताओं का सम्मान हुआ है बल्कि उनका गौरव भी बढ़ा है।

गुरुकुल में कुश्ती के लिए खेलो इंडिया लघु केंद्र स्वीकृत

झज्जर। जिला खेल अधिकारी सतेंद्र कुमार ने बताया कि खेल संस्कृति को जिले में और सशक्त बनाने की दिशा में हरियाणा के खेल विभाग द्वारा गुरुकुल झज्जर में कुश्ती खेल का 'खेलो इंडिया लघु केंद्र' स्वीकृत किया गया है। यह केंद्र अब न केवल उदीयमान खिलाड़ियों को बेहतर प्रशिक्षण उपलब्ध कराएगा, बल्कि पूर्व चैम्पियन एथलीटों को भी अनुभव साझा करने का मंच प्रदान करेगा। ग्रामीण प्रतिभाओं को अब दूर-दराज के खेल संस्थानों में जाने की आवश्यकता नहीं होगी। इसी जिले में उन्हें उच्च स्तर की ट्रेनिंग मिलेगी। उन्होंने बताया कि इस केंद्र में अनुभव के आधार पर पूर्व चैम्पियन एथलीट को जोड़ा जाएगा, जिसके लिए 30 जून तक आवेदन आमंत्रित किए गए हैं।

पौने तीन करोड़ की लागत से चकाचक होगा शहीदी पार्क, कार्य जोरों पर

आधुनिक फव्वारे, बेहतरीन लाइटिंग और पानी निकासी की होगी समुचित व्यवस्था

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

पिछले काफी समय से मूलभूत सुविधाओं से वंचित शहर के शहीदी पार्क की नगर परिषद द्वारा सुध ली गई है। पार्क के सौंदर्यकरण को लेकर भारी भरकम राशि खर्च कर आधुनिक लुक दिया जा रहा है। पार्क के सौंदर्यकरण का कार्य जोरों पर चल रहा है। पार्क के सौंदर्यकरण पर करीब पौने तीन करोड़ की लागत का अनुमान लगाया गया है। जिसके तहत पार्क में आधुनिक फव्वारे, बेहतरीन लाईटिंग व्यवस्था, मखमली घास, पानी निकासी की समुचित व्यवस्था, टूटे फुटपाथ की मरम्मत व उस पर टाईलें बिछाना, ओपन जिम व आर्कषक झूले लगाने की योजना को अमलीजामा पहनाया जा रहा है। इसके अलावा पर्यावरण व जल संरक्षण को लेकर भी कार्य किए जाएंगे। जल संरक्षण के लिए जहां पार्क में बडे.बड़े टैंक बनाए जाएंगे, वहीं पौधारोपण भी किया जाएगा। बरसाती पानी को टैंकों में एकत्रित किया जाएगा। जिसे बाद में पौधों की सिंचाई के कार्य में लाया जाएगा। बता दें कि झज्जर बहादुरगढ़ मार्ग पर स्थित शहीदी पार्क ऐतिहासिक पार्क है। इसमें शहीदों के स्मारक के अलावा ऐतिहासिक बुआ हसन का तालाब भी है। जिसे देखने के लिए दूर दराज क्षेत्रों से लोग आते है।

ओपन जिम के अलावा, पार्क में लगाएंगे आर्कषक झूले

झज्जर। शहर के शहीदी पार्क को आधुनिक लुक देने में जुटे राज मिस्त्री व शहीदी पार्क में फुटपाथ पर बिछाने के लिए रखी टाइलें। फोटो : हरिभूमि

पार्कों का करवाया जा रहा सौंदर्यीकरण

नगर परिषद के चेयरमैन जिले सिंह सैनी ने कहा कि शहीदी पार्क में आमजन को बेहतरीन सुविधाएं देने के लिए कार्य जोरों पर चल रहा है। जिस पर करीब पौने तीन करोड़ रुपये की लागत आएगी। जिसमे आधुनिक ओपन जिम, बेहतरीन लाईटिंग व्यवस्था, हरियाली, आर्कषक झूले, मखमली घास सहित तमाम सुविधाएं आमजन को मिलेंगी।

पहले ही गर्मी से बुरा हाल, उस पर बिजली के कट की मार

झज्जर। उमस भरी गर्मी के कारण जहां लोगों का पहले से बुरा हाल है वहीं बिजली के कट लोगों पर दोहरी मार कर रहे हैं। लोगों का कहना है कि जहां निगम अधिकारी उपभोक्ताओं को बिजली की सुचारू सप्लाई होने के दावे कर रहे हैं वहीं निगम द्वारा घोषित व अघोषित कटों के कारण दिन में कई बार आधे घंटे से लेकर दो-दो तीन-तीन घंटे बिजली गुल रहती है। वहीं थोड़ी देर के लिए होने वाली बूंदा-बांदी के कारण भी धूप निकलने के बाद वातावरण में उमस पैदा हो रही है। इस चिपचिपाती गर्मी में कूलर व पंखें भी लोगों के पसीने सुखाने में नाकाम साबित हो रहे हैं। शनिवार को दिन का अधिकतम तापमान 34 डिग्री सेल्सयिस तथा न्यूनतम 28 डिग्री सेल्सयिस दर्ज किया गया जबकि वातावरण में आद्रता 76 प्रतिशत रही। सब्जी विक्रेता करण, काले, भोले आदि ने बताया कि उनके क्षेत्र में जहां रात के समय कई देर तक बिजली व्यवस्था बाधित रही वहीं अब सुबह सात बजे फिर से आधे घंटे के लिए बिजली गुल हो गई। उधर, शनिवार को जहां दिन भर तेज धूप ने लोगों का जीना मुहाल रखा वहीं शाम करीब आठ बजे थोड़ी देर के बरसी रिमझिम फुहारों ने लोगों में गर्मी से राहत पाने की आस बांधी, लेकिन इन रिमझिम फुहारों की गति इतनी धीमी रही कि ठीक से जमीन भी गीली नहीं हो पाई। विशेषज्ञों द्वारा रविवार को बारिश होने का अनुमान लगाया जा रहा है।

अपने बच्चों के खान-पान पर ध्यान दे अभिभावक मित्रता क्लीनिक में कराएं किशोर काउंसलिंग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

- किशोर स्वास्थ्य काउंसलर संदीप कुमार जांगड़ा ने किशोर-किशोरियों को स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान की।

राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत मित्रता क्लीनिक द्वारा जन आरोग्य मंदिर धौड़ में एक विशेष आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिला किशोर स्वास्थ्य काउंसलर संदीप कुमार जांगड़ा ने किशोर-किशोरियों को स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान की। उन्होंने विद्यार्थियों को खान-पान, रहन-सहन, गुड टच एवं बैड टच तथा एनीमिया जैसी महत्वपूर्ण समस्याओं पर जानकारी देते हुए अभिभावकों से आग्रह किया कि वे अपने बच्चों के खान-पान पर ध्यान दें। उन्होंने कहा कि बच्चों को काउंसलिंग के लिए मित्रता क्लीनिक में लेकर आएं, जिससे बच्चे का आत्म विश्वास बढ़ेगा। इस दौरान उपस्थित बच्चों में गुड़ व चना वितरित कर उनके पोषण पर ध्यान आकर्षित किया गया। कार्यक्रम में वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण और व्यक्तिगत व सार्वजनिक स्थानों की सफाई जैसे विषयों पर जागरूकता गतिविधियां आयोजित की गईं। स्वास्थ्य कर्मचारियों एवं ग्रामवासियों द्वारा बच्चों के साथ मिलकर सब सेंटर क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चलाते हुए श्रमदान भी किया गया। इस मौके पर सीएचओ डॉक्टर मोनिका, एएनएम कमलेश, आशा वर्कर निर्मला, सुमन, मुकेश, ममता, किशोर पारुल, जिगर, संदीप, आयुष, प्रवेश आदि मौजूद रहे।

झज्जर। कार्यक्रम में बच्चों व अभिभावकों के साथ उपस्थित स्वास्थ्यकर्मी। फोटो : हरिभूमि

दुकान में घुसकर जानलेवा हमला करने वाले आरोपी गिरफ्तार

तीन दिन के पुलिस रिमांड पर भेजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

एसटीएफ की एक टीम द्वारा दुकान में घुसकर जानलेवा हमला करने मामले में कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। एसटीएफ प्रभारी उप-निरीक्षक राजेश कुमार ने बताया कि सोमबीर निवासी अकेहड़ी मदनपुर ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि उसका बेटा गांव के बस स्टैंड पर एक दुकान पर बैठा था। तभी अचानक से पवन निवासी अकेहड़ी मदनपुर और उसके साथी मोटरसाइकिल पर सवार होकर आए जिनके हाथों में तेजधार हथियार थे, उन्होंने दुकान में अंदर घुसकर मेरे लड़के आर्यन पर जानलेवा हमला कर दिया। उन्होंने बताया कि शिकायत के आधार पर कार्रवाई करते हुए मामला दर्ज किया गया था।

झज्जर। पकड़े गए आरोपी पुलिस टीम के साथ।

मामले में कार्रवाई करते हुए एएसआई महेश कुमार की टीम द्वारा दो आरोपियों को पकड़ा गया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान सोनू और पवन निवासी अकेहडी मदनपुर जिला झज्जर के तौर पर की गई है। आरोपियों के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाई करते हुए स्थानीय अदालत में पेश किया गया। जहां से आरोपियों को पूछताछ के लिए तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

शहर की कॉलोनियों व मोहल्लों में लोगों को जान का डर, हमला कर रहे गोवंश

रेवाड़ी। शहर में सड़कों पर विचरण करने वाले गोवंश की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। नगर परिषद की ओर से गोवंश को पकड़कर गोशालाओं में भेजने का ठेका दिया हुआ है। शहर की सड़कों पर घूमती ज्यादातार गाय गो-पालकों की है, जिन्हें दूध निकालने के बाद सड़कों पर पेट भरने के लिए छोड़ दिया जाता है, जिसके बाद सड़कों पर गोवंश हिंसक बनकर लोगों को अस्पताल पहुंचाने का काम कर रहे है। जून माह में दो अलग-अलग स्थानों पर आक्रमक रूप में आई गाय 6 लोगों को घायल कर चुकी है। 16 जून को मोहल्ला कुतुबपुर में पांच लोगों व 26 जून को सेक्टर-4 में एक युवक को घायल कर चुकी है। इससे पहले भी गोवंश दो वर्ष में काफी लोगों को घायल कर चुके है। गत वर्षो में गोवंश के हमले से एक फोटोग्राफर डोली व एक बुजुर्ग की जान भी जा चुकी है।

स्वास्थ्य जांच शिविर का 53 लोगों ने उठाया लाभ

- गांव रायपुर में आयुष विभाग ने नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

क्षेत्र के गांव रायपुर में आयुष विभाग द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवं योग सत्र का आयोजन किया गया। शिविर में ग्राम सरपंच मोनिका, सरपंच प्रतिनिधि रामेश्वर व वीरेंद्र डबास ने विशेष रूप से शिरकत की।

डॉक्टर काजल डबास व उनकी टीम द्वारा ग्रामीणों की स्वास्थ्य जांच करते हुए जरुरतमंद लोगों में निःशुल्क दवाइयां वितरित की। शिविर में 53 लोगों ने अपनी स्वास्थ्य जांच कराई।

झज्जर। शिविर के दौरान उपस्थित चिकित्सीय टीम एवं ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

इसके अलावा योगा सहायक नवीन कायत द्वारा लोगों को योग से होने वाले फायदों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान सरपंच मोनिका ने लोगों से आह्वान किया कि वे योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। इस दौरान लोगों को नियमित योग करने संबंधी शपथ भी दिलाई गई।

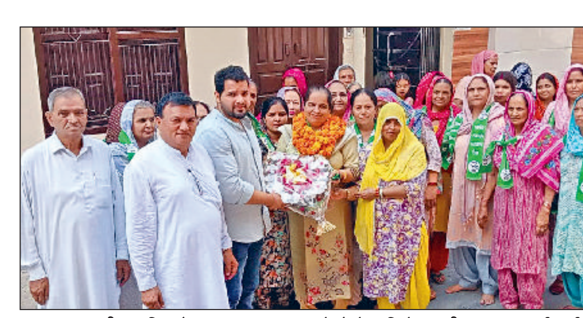

बहादुरगढ़। नीलम ढिल्लो का स्वागत करत इनेलो नेता जितेंद्र राठी व अन्य कार्यकर्ता।

प्रदेश उपाध्यक्ष नीलम ढिल्लो का स्वागत

बहादुरगढ़। इनेलो महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश उपाध्यक्ष बनने पर नीलम ढिल्लो का कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। इस दौरान नीलम ढिल्लो ने जहां शीर्ष नेतृत्व का आभार प्रकट किया, वहीं पार्टी संगठन की मजबूती के लिए पूरी निष्ठा व ईमानदारी से कार्य करने की बात कही। स्वागत कार्यक्रम में इनेलो युवा प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रधान महासचिव जितेंद्र नफे सिंह राठी व जिला शहरी अध्यक्ष रामनिवास सैनी मुख्य रूप से मौजूद रहे। उन्होंने भी नवनियुक्त महिला प्रदेश उपाध्यक्ष नीलम ढिल्लो को गुलदस्ता भेंट कर शुभकामनाएं दी। जितेंद्र नफे सिंह राठी ने कहा कि इंडियन नेशनल लोकदल द्वारा पूरे प्रदेश में संगठन को मजबूती देने के लिए कार्यकारिणी गठित की जा रही है। इनेलो जनता के हितों की लड़ाई लड़ने के लिए उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है। इस अवसर पर ईशा डोरा, ममता, सुदेश जांगड़ा, कमला, बेबी, संतोष, विद्या, रानी, प्रिया, राजेश, अनीता, सुदेश शर्मा, बाला, सरिता शर्मा, रजनी व अनवी आदि मौजूद रहे।

इन्वेस्टमेंट के नाम पर लाखों की ठगी में दो और आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। साइबर थाना पुलिस ने कंपनी में इन्वेस्टमेंट के नाम पर लाखों रुपये की साइबर ठगी करने के मामले में दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान यूपी के महाराजगंज के गांव तुठीबारी हालआबाद महिन्द्रनगर लोहारा जिला लुधियाना पंजाब निवासी रमेश कुमार सैनी व पंजाब के जिला लुधियाना के गुरुनानंक नगर निवासी राजेन्द्र सैनी के रूप में हुई है। पुलिस इस मामले में तीन आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। गत 14 जनवरी को गांव बटोड़ी निवासी अजीत कुमार ने अपनी शिकायत बताया था कि गत वर्ष दिसंबर माह में उसके मोबाइल फोन पर लॉरयल कंपनी के एप का एक लिंक आया था। लिंक पर क्लिक करने के बाद एप इंस्टाल हो गया। उसे एक व्हाट्सग्रुप से जोड़ा गया, जिसमें एप के जरिए पैसा इन्वेस्ट करने पर अच्छा रिटर्न मिलने की बात कही गई थी। उसने झांसे में आकर गत वर्ष 27 दिसंबर से इस साल 6 जनवरी तक आरोपियों के अलग-अलग खातों में कुल 7 लाख 59 हजार 654 रुपये जमा करा दिए। उसने यह राशि अपने व अपने पिता के बैंक खातों के साथ-साथ परिवार के पांच अन्य सदस्यों के खाते से ट्रांसफर कराई थी।

मुहिम | विधायक की पत्नी सविता यादव व एडवोकेट निशांत यादव ने किया नेतृत्व

मॉडल टाउन से पुराना कोर्ट रोड पर चला सफाई अभियान, जेसीबी से साफ करवाई खरपतवार

- पुराना कोर्ट मैदान में लगने वाली रेहड़ियों के संचालकों को अपना कूड़ादान रखने के निर्देश दिए

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

शहर को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने को की मुहिम के तहत शनिवार को विधायक लक्ष्मण यादव की पत्नी सविता यादव तथा एडवोकेट निशांत यादव के नेतृत्व में बस स्टैंड से रेडक्रॉस भवन तक सफाई अभियान चलाया गया।

कार्यक्रम का आगाज बस स्टैंड से मॉडल टाउन को जाने वाले चौक पर स्थित हनुमान मंदिर से किया गया। यहां से मॉडल टाउन, शिव चौक, पुराना कोर्ट रोड, जेल परिसर, जेल परिसर के सामने खाली मैदान से लेकर रेडक्रॉस कार्यालय परिसर में सफाई की गई। पुराना कोर्ट मैदान में लगने वाली रेहड़ी संचालकों को अपना कूड़ादान रखने के निर्देश दिए गए तथा मैदान की साफ-सफाई के लिए दो वॉलेंटियर्स की तैनाती करने का निर्णय लिया गया, जो मैदान तथा आसपास के क्षेत्र की साफ-व्यवस्था की निगरानी रखेंगे। जेसीबी मशीन की मदद से सड़क के आसपास रखी कबाड़ बनी रेहडियों का भी निस्तारण किया गया व जेसीबी से जेल परिसर व रेडक्रॉस कार्यालय परिसर की खरपतवार को साफ किया गया। इस मौके पर डब्ल्यूसीडीपीओ सुमन यादव के नेतृत्व में आंगनबाड़ी कार्यकतार्ओं ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का सार्थक संदेश भी दिया। अभियान के बाद अग्रवाल भवन में यादव कल्याण सभा, पंजाबी सभा, जांगिड़ ब्राह्मण सभा तथा अग्रवाल सभा की ओर से समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सफाई अभियान के दौरान नियमित सहयोग प्रदान करने वाले गणमान्य लोगों, विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों तथा सफाई योद्धाओं को सम्मानित किया गया।

सफाई योद्धाओं को फिट रखने के लिए योगासन भी कराए गए। इस मौके पर एडवोकेट निशांत यादव ने कहा कि रेवाड़ी को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने का यह सफाई अभियान लगातार जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि सफाई अभियान को लगातार आमजन का समर्थन मिल रहा है तथा उसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। इस अवसर पर विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी, गणमान्य लोग तथा सफाई योद्धा मौजूद थे।

रेवाड़ी। शिव चौक पर सफाई करते हुए विधायक की टीम तथा रेडक्रास भवन में खरपतवार साफ करती जेसीबी। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में चोरी करने वाले के आरोपी। फोटो : हरिभूमि

कृषि फार्म से चोरी के तीन और आरोपी काबू

धारूहेड़ा। सेक्टर-6 धारूहेड़ा थाना पुलिस ने गांव गढ़ी अलावलपुर में एक कृषि फार्म के कमरे का ताला तोड़कर सामान चोरी करने के मामले में तीन और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों पहचान यूपी के जिला बरेली के गांव मंढोरा निवासी युनुस, मोनिश व शानु के रुप में हुई है। पुलिस इस मामले में दो आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। गत 26 जून को गांव गढ़ी अलावलपुर निवासी संजीत ने अपनी शिकायत में बताया था कि उसका गांव में एक कृषि फार्म है, जिसकी रेडिमेड चारदीवारी बनाई हुई है। कृषि फार्म में उसने एक कमरा बनाया हुआ है। जब वह 26 जून की सुबह अपने फार्म पर गया तो कमरे का ताला टूटा हुआ था। चोर कमरे से एक स्पलिट ऐसी, गैस सिलेंडर, 12 फव्वारा नोजल व लेबर के सामान सहित काफी सामान चोरी कर ले गए। संजीत ने आरोप लगाया था कि चोरी की वारदात को गांव के ही आकाश, मन्नू व उनके अन्य साथियों ने अंजाम दिया है। पुलिस ने मामले में संलिप्त दो आरोपी गांव गढ़ी अलावलपुर निवासी आकाश व मन्नू को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उन्होंने सामान कबाड़ी का काम करने वाले यूपी निवासी युनुस व उसके दो भाई मोनिश व शानू को बेच दिया है। पुलिस ने शुक्रवार को मामले में संलिप्त तीन और आरोपी युनुस, मोनिश व शानू को भी गिरफ्तार कर लिया है।

खबर संक्षेप

बहादुरगढ़। कैंप में जांच कराते भाजपा नेता राजपाल जांगड़ा व अन्य।

शिविर में 150 लोगों ने कराई जांच

बहादुरगढ़। वार्ड 21 स्थित ओम गार्डन में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन हुआ। भाजपा नेता राजपाल जांगडा, पार्षद प्रतिनिधि सिकंदर ने बतौर मुख्य अतिथि कार्यक्रम में शिरकत की। कार्यक्रम का आयोजन ओमबीर छिकारा द्वारा किया गया। लोगों को बीपी, शुगर, निःशुल्क दवाइयां वितरित की गई। हिन्दवेयर की डॉक्टर टीम द्वारा लगाया गया। निःशुल्क स्वास्थ्य जांच कैंप में 150 लोगों ने लाभ उठाया। ओमबीर छिकारा व डॉ. उमेश शर्मा ने लोगो को स्वास्थ्य का ख्याल रखने के लिए जागरूकक किया। एएनएम अनीता, लैब टेक्नीशियन पूनम, फार्मासिस्ट नरेंद्र, बबीता दहिया, मैनेजर प्रमोद शर्मा, गौरव शर्मा, चंद्रकांत भारद्वाज, नरेंद्र कौशिक, आशा रानी, अभिनय आदि इस अवसर पर मौजूद रहे।

राज्य शिक्षक पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित

झज्जर। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि शिक्षा विभाग हरियाणा की ओर से राज्य शिक्षक पुरस्कार-2025 के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। योग्य और पात्र अध्यापक आगामी 11 जुलाई तक विभागीय पोर्टल के माध्यम से अपना आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि केवल पोर्टल के माध्यम से प्राप्त होने वाले ऑनलाइन आवेदन ही स्वीकार किए जाएंगे। किसी भी परिस्थिति में ऑफलाइन आवेदन स्वीकार नहीं किए जाएंगे। यदि आवेदक शिक्षक को पोर्टल या लिंक पर अपना आवेदन करते समय किसी प्रकार की कोई तकनीकी समस्या आती है तो वह विभाग की ईमेल आईडी स्टेटटीचरअवार्ड2021 @ जीमेल.कॉम या हेल्पलाइन नंबर 0172-5049801 पर संपर्क कर सकता है।

धूमधाम से निकाली भगवान जगन्नाथ की शोभा यात्रा

श्रद्धालुओं में भगवान का रथ खींचने की मची होड़

उत्साह से मनाया महोत्सव, मंदिर को फूलों से सजाया

बहादुरगढ़। भगवन जगन्नाथ के रथ को खींचते श्रद्धालु तथा रथ में विराजे भगवान जगनाथ, बलदेव व सुभद्रा। फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

लाइनपार स्थित इस्कॉन मंदिर की ओर से शहर में भगवान जगन्नाथ की यात्रा उत्साह के साथ निकाली गई। इस उपलक्ष्य में मंदिर को फूलों से सजाया गया। कई दिन से कार्यक्रम की तैयारियां चल रही थी। सुबह भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलदेव व बहन सुभद्रा की विधि पूर्वक पूजा अर्चना की गई। इसके बाद उन्हें फूलों से सजे रथ में विराजा गया। फिर रथ में सवार होकर भगवान जगन्नाथ व उनके भाई, बहन का शहर में भ्रमण कराया गया। रथ यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। श्रद्धालुओं में भगवान जगन्नाथ का रथ खींचने की होड़ मची रही। जगह-जगह यात्रा का स्वागत हुआ। लोगों ने प्रभु से आशीर्वाद लिया। कीर्तन मंडली आकर्षण का केंद्र रही। स्वामी नित्यानंद आश्रय दास, रामानारी प्रभु, परम प्रभु, देवदत्त अर्जुन, देवराज नारद, मधुशंका, मनोहर मुरारी, अतिप्रिय वृषिनी, विक्रम माहेश्वरी सहित काफी लोग यात्रा में शामिल हुए। मंदिर प्रमुख नित्यानंद आश्रय दास ने कहा कि भगवान जगन्नाथ करुणामयी हैं। वह कृष्ण का ही रूप हैं। उनका रथ यात्रा महोत्सव दुनियाभर में उत्साह के साथ मनाया जाता है। भगवान हमें सत्य की राह पर चलने की प्रेरणा देते हैं। इसलिए आमजन को सत्य की राह पर चलकर जीव हित में काम करना चाहिए।

झज्जर। भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा के लिए प्रसाद तैयार करते हुए हलवाई।

झज्जर में आज निकलेगी भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा, तैयारियां पूरी

झज्जर। अंतर राष्ट्रीय श्रीकृष्णभावनामृत संघ द्वारा रविवार को शहर में भगवान जगन्नाथ यात्रा का आयोजन किया जाएगा। प्रवक्ता ने बताया कि कच्चा बाबरा रोड स्थित निर्माणाधीर राधा-कृष्ण मंदिर से दोपहर बाद सायं करीब तीन बजे शुरू होने वाली भगवान जगन्नाथ, बलदेव व सुभद्रा जी रथ यात्रा से पूर्व दोपहर एक बजे भगवान जगन्नाथ का स्वागत, सवा एक बजे सहयोगियों द्वारा मुख्य आरती की जाएगी। इसके बाद तीन बजे रथ यात्रा की शुरूआत होगी जो सिलानी गेट, बीकानेर चौक, धानक धर्मशाला, पुरानी तहसील मार्ग, नागरिक अस्पताल, छिक्कारा चौक, अंबेडकर चौक, बेरी गेट से होते हुए बाबा प्रसादगिरी मंदिर के नजदीक स्थित श्री गौशाला परिसर में पहुंच कर संपन्न होगी। उन्होंने बताया कि इस यात्रा में जहां भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली बतौर मुख्यातिथि, जबकि हरियाणा गौसेवा आयोग के सदस्य प्रमोद बंसल, भाजपा के सक्रियता सदस्यता अभियान के प्रदेश सह प्रमुख एडवोकेट राजकुमार कटारिया, संस्कारम ग्रुप के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल यादव, राजन गोयल, रविंद्र कुमार, राजीव बंसल, राजेंद्र सिंह दहिया विशिष्टातिथि के रूप में शिरकत करेंगे।

श्रीगौशाला में तैयार किया गया प्रसाद : आयोजक समिति पदाधिकारियों द्वारा भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा के लिए आवश्यक तैयारियां की जा रही है। वहीं आरती के दौरान श्रद्धालुओं में बांटा जाने वाला प्रसाद भी बाबा प्रसादगिरी मंदिर के नजदीक स्थित श्री गौशाला में तैयार किया गया। प्रसाद तैयार करने के लिए दिन भर हलवाई कार्य में जुटे रहे।

तीन दिवसीय कार्यशाला संपन्न

बहादुरगढ़। कार्यशाला में भाग लेते प्रिंसिपल व शिक्षक।

- आधुनिक शिक्षण विधियों और तकनीकों के बारे में कराया अवगत

बहादुरगढ़। डीएवी विद्यालय के प्रांगण में चल रही तीन दिवसिय कार्यशाला का शनिवार को समापन किया गया। एआरओ वीके मित्तल ने इसे एक सफल आयोजन बताया। जिसमे विशेषज्ञों द्वारा आधुनिक शिक्षण विधियों और तकनीकों का ज्ञान दिया गया। समापन समारोह के दौरान विद्यालय के प्रिंसिपल प्राचार्य राजदीप कुलश्रेष्ठ ने एआरओ वीके मित्तल व अन्य डीएवी विद्यालय के प्रिंसिपल शंकर लाल, जगदीप कौर, सुनील शर्मा, सविता धनखड़, राजेश कुमार, इंदु तथा विषय विशेषज्ञों व अध्यापकों का धन्यवाद किया। प्रतिभागियों ने भी इस कार्यक्रम के बारे में सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें नवीनतम शिक्षण विधियां सीखने का अवसर मिला और अब हम सब एक नई ऊर्जा तथा आत्मविश्वास के साथ कक्षा में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहयोग कर पाएंगे।

देश को एकता के सूत्र में बांधती है संस्कृत : अरविंद

- लाला दयाराम तिगडानिया सरस्वती शिक्षा मंदिर विद्यालय में प्रबोधन वर्ग के समापन सत्र में पर्यटन मंत्री ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बेरी

बेरी। कार्यक्रम में पहुंचने पर पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते आयोजक समिति सदस्य।

संस्कृत को विश्व की सबसे पूर्ण भाषा माना गया है, जोकि देश की एकता व अखंडता को एक सूत्र में बांधती है। आज समाज को यह जिम्मेदारी लेनी चाहिए कि हमारी युवा पीढ़ी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाएं, ताकि देश व समाज को सशक्त बनाया जा सके। यह बात सहकारिता, कारागार, निर्वाचन, विरासत व पर्यटन मंत्री डॉक्टर अरविंद शर्मा ने शनिवार सांय बेरी स्थित लाला दयाराम तिगडानिया सरस्वती शिक्षा मंदिर विद्यालय परिसर में संस्कृत भारती हरियाणा के सौजन्य से आयोजित किए जा रहे प्रबोधन वर्ग के समापन सत्र में मुख्यातिथि के तौर पर शिरकत करते हुए कही। उन्होंने कहा कि प्रदेश में संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लक्ष्य को लेकर बढ़ रहे संस्कृत भारती हरियाणा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उनके निरंतर आयोजन समाज व प्रबुद्धजनों के साथ-साथ युवा पीढ़ी को परिवर्तन का भागीदार बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि संस्कृत महज प्राचीन भाषा नहीं है, अपितु यह भारतीय संस्कृति, दर्शन, साहित्य व धार्मिक परंपराओं का अभिन्न अंग है। आज संस्कृत की शिक्षा से न केवल भाषा की समझ विकसित होती है, वहीं भारतीय सांस्कृतिक धरोहर से भी जुड़ाव बढ़ता है। इस दौरान स्वामी राघव देव, पद्मश्री आचार्या सुकामा, नपा बेरी चेयरमैन देवेंद्र उर्फ बिल्लु पहलवान, डॉक्टर सुमित्रा धनखड़ सहित अन्य भी मौजूद रहे।

मासूमों को न मिलती ममता और न मिलता न्याय

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

इलाके में ममता को शर्मसार करते कई मामले सामने आ चुके हैं। कई नवजात शिशु के शव और भ्रूण मिल चुके हैं। तमाम मामलों में एफआईआर दर्ज होती है, जांच आगे बढ़ती और कुछ समय बाद फाइलें धूल फांकती रह जाती हैं। पिछले महज पांच वर्षों की बात करें तो यहां जाखोदा, रिवाड़ी खेड़ा, बराही फाटक के पास रेलवे लाइन और डाबोदा में नवजात शिशुओं के शव मिल चुके हैं। जन्म के तुरंत बाद इन्हें मरने के लिए छोड़ दिया गया। पुराना कोर्ट में तो गर्दन कटी बच्ची का शव जमीन में दबा हुआ मिला था। इसके अलावा रेलवे अंडर के पास अस्थाई शेल्टर, पुराना बस अड्डा परिसर सहित अन्य जगहों पर भ्रूण मिल चुके हैं। अहम बात ये कि इन नवजातों शिशुओं तथा भ्रूणों को मां की ममता तो मिलती ही नहीं है, वहीं मरने के बाद न्याय भी नहीं मिल पाता। हर बार केस दर्ज होते हैं और जांच की जाती है लेकिन मासूमों के गुनहगार कभी गिरफ्त में नहीं आ पाते। न जाने ऐसी क्या वजह है कि इन्हें न्याय नहीं मिल पाता। खैर, लाइनपार में जो नवजात बच्चा मिला है, वह स्वस्थ है। उम्मीद है, पुलिस उसके गुनगहारों को जरूर ढूंढेगी।

पेड़ पर लटका मिला व्यक्ति का शव, शिनाख्त न होने पर पुलिस ने किया अंतिम संस्कार

कोसली रोड स्थित फ्लाईओवर के नजदीक का मामला

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

झज्जर। दाह संस्कार के लिए शव को नगर परिषद कर्मचारियों को सौंपने संबंधी दस्तावेजों पर हस्ताक्षर कराते हुए पुलिसकर्मी। फोटो: हरिभूमि

शहर के कोसली रोड स्थित फ्लाईओवर के नजदीक पड़े खाली प्लाटों में व्यक्ति द्वारा पेड पर फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या किए जाने के मामले में शनिवार को शिनाख्त न होने के चलते मृतक के शव का अंतिम संस्कार कराया गया। मामले के जांच अधिकारी विजेंद्र ने बताया कि 25 जून की देर शाम उन्हें कोसली फ्लाईओवर के नजदीक किसी व्यक्ति द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या करने सूचना मिली थी। इसके वे मौके पर पहुंचे तथा राहगीरों की सहायता से शव को फांसी के फंदे से नीचे उतरवाकर उसे पोस्टमार्टम के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल भिजवाया। उन्होंने बताया कि मृतक की शिनाख्त के प्रयास किए जा रहे थे तथा शव को शिनाख्त के लिए 72 घंटों के लिए नागरिक अस्पताल के शवगृह में रखवाया गया था। अब 72 घंटे बीतने के बाद भी जब शव की शिनाख्त नहीं हो पाई तो पोस्टमार्टम कराने के बाद शव को अंतिम संस्कार के लिए नगर परिषद की टीम को सौंप दिया गया है। सफाई दरोगा सुंदरलाल की मौजूदगी में कर्मचारियों द्वारा शव का अंतिम संस्कार किया गया।

बहादुरगढ़। लोगों को नशे के प्रति जागरूक करते इंस्पेक्टर सतीश कुमार।

नशे के प्रति ग्रामीणों को किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

नशे के विरुद्ध पुलिस की ओर से जागरूकता मुहिम चलाई जा रही है। इस मुहिम के तहत इंस्पेक्टर सतीश कुमार की अगुवाई वाली टीम ने आसौदा क्षेत्र में लोगों को जागरूक किया। लोगों को नशे से दूर रहने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा कि नशा बेहद गंभीर समस्या है। इस समस्या को मिटाने के लिए जन आंदोलन की आवश्यकता है। युवा नशे की चपेट में आकर अपराध की तरफ बढ़ रहा है। इसलिए माता-पिता को भी अपने बच्चों की दैनिक गतिविधि पर ध्यान रखना चाहिए और उन्हें शिक्षा खेल-कूद तथा सामाजिक हित की गतिविधियों में आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर आपके आसपास कोई व्यक्ति नशा करता है तो आप उसे सिविल अस्पताल के एडिशन सेंटर में काउंसलिंग करवा कर दवाई दिला सकते हो। नशा हंसते खेलते परिवार को तबाह कर देता है। हर वर्ग को मिलकर इसके खिलाफ अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। उन्होंने कहा कि अगर कोई व्यक्ति नशे की खरीद फरोख्त करता है तो इसकी सूचना पुलिस को दें ताकि समय रहते उचित कार्रवाई की जा सके।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

शिविर में 148 लोगों ने पाया स्वास्थ्य लाभ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

- ब्रह्मशक्ति संजीवनी अस्पताल में लगाया नि:शुल्क जांच शिविर

रोहतक-दिल्ली रोड स्थित ब्रह्मशक्ति संजीवनी अस्पताल में मेदांता अस्पताल के सहयोग से शनिवार को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया गया। कुल 148 लोगों ने इस शिविर का लाभ उठाया। शिविर का शुभारंभ अस्पताल के निदेशक एवं वरिष्ठ सर्जन डा. मनीष शर्मा व मेदांता अस्पताल की चिकित्सकों की टीम ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। शिविर में बीपी, आरबीएस, ईसीजी, बीएमडी और पीएफटी की जांच निःशुल्क की गई। शिविर में बीएमडी टेस्ट के बाद कई व्यक्तियों में कैल्शियम की कमी पाई गई, तो कुछ मरीजों ने घुटने व पीठ दर्द की शिकायत की। डा. मनीष शर्मा ने कैल्शियम की कमी वाले मरीजों को समय पर दवाईयां लेने व पौष्टिक भोजन लेने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि समय समय पर अपने स्वास्थ्य की जांच करवाते रहना चाहिए। इसके अलावा उन्होंने नियमित व्यायाम करने व मोटापे को नियंत्रित करने की सलाह भी दी। अस्पताल के मैनेजर विक्की शर्मा सहित तमाम स्टाफ सदस्य इस अवसर पर मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। शिविर में महिला की जांच करते चिकित्सक।

जनहित की सूचनाओं के लिए डीआईपीआरओ से रहें अपडेट

झज्जर। डीआईपीआरओ सतीश कुमार ने बताया कि प्रदेश सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं और जिला प्रशासन की महत्वपूर्ण गतिविधियों को डीआईपीआरओ के सोशल मीडिया पर नियमित रूप से अपडेट किया जा रहा है। नागरिक प्रदेश सरकारी योजनाओं, नीतियों और जिला प्रशासन की गतिविधियों व जनहित की सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए डीआईपीआरओ के सोशल मीडिया अकाउंट्स को फॉलो करें।

दुर्गंध और जहरीले धुएं ने लोगो को किया परेशान

इंडस्ट्रियल वेस्ट जलाकर पर्यावरण को पहुंचाया जा रहा नुकसान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

बहादुरगढ़। आग के चलते कचरे से उठता धुआं तथा ड्रेन के पास जला हुआ इंडस्ट्रियल वेस्ट।

एमआईई में वेस्ट जुआं ड्रेन के निकट खाली पड़ी जमीन पर आए दिन कचरा जला कर पर्यावरण को नुकसान पहुंचाया जा रहा है। बीती रात को भी यहां इंडस्ट्रियल वेस्ट में भीषण आग लग गई। दमकल कर्मियों ने कड़ी मशक्कत से आग पर काबू पाया। केमिकल, चमड़ा आदि जलने से फैले धुएं के कारण आसपास रहने वाले लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। दरअसल, बहादुरगढ़ के एमआईई में वेस्ट जुआं ड्रेन के निकट खाली जमीन पर काफी समय से फैक्ट्रियों का कचरा डाला जा रहा है। जब कचरा ज्यादा हो जाता है तो इसे आग के हवाले कर दिया जाता है। जिस कारण दुर्गंध के साथ जहरीला धुआं फैल जाता है। शुक्रवार शाम से शनिवार सुबह तक यहां कूड़ा जलता रहा। दमकल विभाग के कर्मचारियों ने रात से लेकर सुबह तक आग बुझाई। वार्ड-18 के पार्षद संदीप दहिया ने बताया कि आसपास की लेदर फैक्ट्री और दूसरी फैक्ट्रियां अपना वेस्ट यहां डालती हैं। कई बार उन्हें कहा गया है लेकिन वे मानते नही हैं। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भी सिर्फ नोटिस देकर खामोश हो जाता है और नगर परिषद भी कोई कार्रवाई नहीं करती। जब यहां आग लगती है तो आसपास कॉलोनी में रह रहे लोगों को सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है। इस दिशा में ध्यान देते हुए सख्त कार्रवाई की जाए।

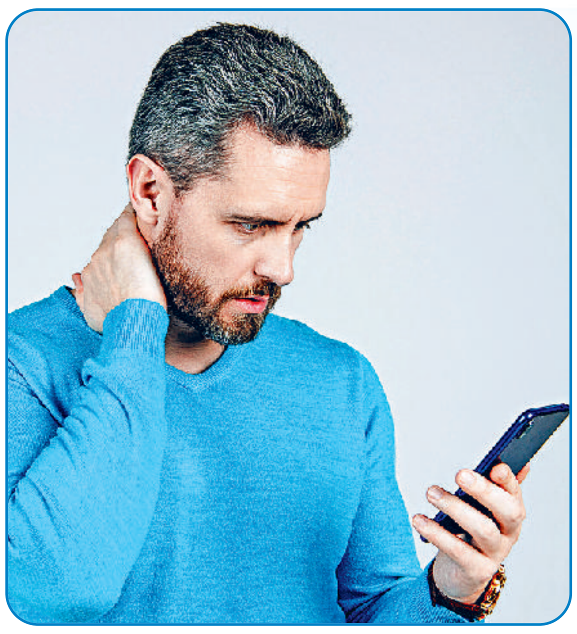

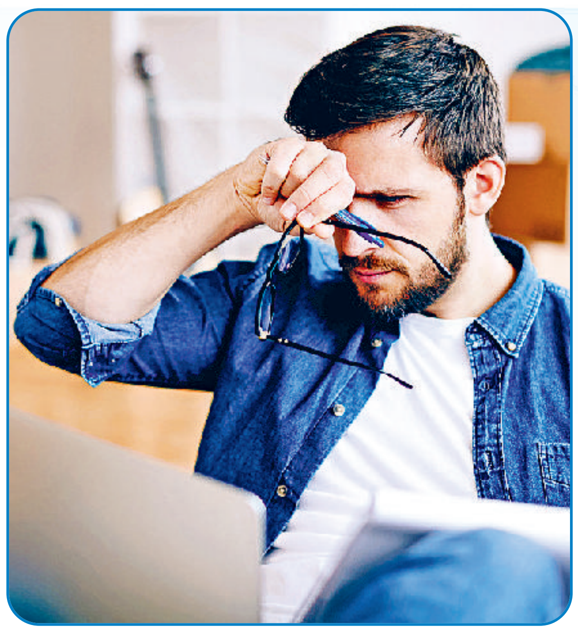

स्पेशलः वर्ल्ड सोशल मीडिया डे
30 जून

तन-मन को कर रहा बीमार
सोशल मीडिया एडिक्शन

इन दिनों हर उम्र के लोग सोशल मीडिया के एडिक्शन में उलझे हुए हैं। इस एडिक्शन से घंटों गैजेट्स से चिपके रहने और गलत अंदाज में उसे ऑपरेट करने से कई तरह की फिजिकल प्रॉब्लम्स लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रही हैं। यही नहीं इसकी लत लोगों को मानसिक रूप से भी बीमार बना रही है। वो कौन सी बीमारियां हैं और इनसे बचने के लिए क्या उपाय अपना सकते हैं, इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

कवर स्टोरी
डॉ. मोनिका शर्मा

आमतौर पर सोशल मीडिया एडिक्शन के नेगेटिव इफेक्ट्स को मानसिक सेहत से ही जोड़कर देखा जाता है। परिचित-अपरिचित लोगों की सुंदर तस्वीरों और अच्छी-बुरी सूचनाओं का मेल मन को नकारात्मक रूप से प्रभावित भी करता है। यहां ध्यान रखना जरूरी है कि सोशल मीडिया में हर तरह के कंटेंट को देखते रहना फिजिकल हेल्थ पर भी बुरा असर डालता है। शरीर के बहुत अंग स्क्रीन स्क्रॉलिंग को दिए जाने वाले समय के नेगेटिव असर को झेलते हैं।

स्किन-विजन पर दुष्प्रभाव

सोशल मीडिया अपडेट्स को देखने के लिए हरदम स्क्रीन में झांकते रहना, आंखों की रोशनी छीन रहा है। बच्चे-बड़े सभी की आईसाइट कमजोर हो रही है। आंखों में सूखापन, थकान और दूसरी समस्याएं बढ़ रही हैं। रात को सोते समय कम रोशनी में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को स्क्रॉल करना तो आंखों पर सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव डाल रहा है। वर्चुअल वर्ल्ड में पल-पल दिखती दूसरों की अपडेट्स इतनी इंटरेस्टिंग लगती हैं कि बिना ब्रेक स्मार्ट फोन की स्क्रीन में देखते रहने की लत लग जाती है। रिसर्च फर्म 'रेडसियर' के अनुसार हमारे यहां हर यूजर हर दिन औसतन 7.3 घंटे अपने स्मार्टफोन की स्क्रीन पर बिता रहा है। इसमें से ज्यादातर टाइम सोशल मीडिया पर बीत रहा है। इस डिजिटल व्यस्तता से सिरदर्द के साथ ही आंखों में तनाव एवं थकान भी बढ़ती है। मौजूदा समय में अधिकतर यूजर्स की आंखें यह डिजिटल स्ट्रेस झेल रही हैं। अंधेरे में भी स्क्रीन स्क्रॉल करने की आदत ना केवल तेजी से नजर कमजोर करती है बल्कि आंखों के नीचे डार्क सर्कल्स का भी कारण बनती है। इतना ही नहीं कई लोगों को स्मार्ट फोन से निकलने वाली ब्लू लाइट से चेहरे पर डार्क स्पॉट और पिगमेंटेशन की समस्या हो सकती है। असल में ब्लू लाइट त्वचा के रोम-रोम में समाते हुए स्किन में खुजली, रूखापन और टैनिंग की समस्या की भी वजह बनती है।

बिगड़ता बॉडी पोश्चर

पार्क में वॉक करते हुए, बिस्तर पर आराम करते हुए, गाड़ी चलाते हुए या जिम में एक्सरसाइज करते हुए। लोग हर समय स्मार्ट गैजेट्स की स्क्रीन खंगालते रहते हैं। इसका कारण सोशल मीडिया में मौजूदगी दर्ज करवाना ही है। असल दुनिया में अनुपस्थित होने से एक ओर उस समय की जा रही एक्टिविटी पर फोकस नहीं करते तो दूसरी ओर शरीर के विशेष अंगों पर अधिक दबाव भी पड़ता है। फोन की स्क्रीन में नीचे की तरफ देखते रहने से टेक नेक की समस्या बढ़ रही है। यह हेल्थ प्रॉब्लम गर्दन में दर्द, अकड़न और सिरदर्द से जुड़ी है। साथ ही स्क्रीन स्क्रॉलिंग बैक पेन और कंधों के दर्द से जुड़ी परेशानियों की भी वजह साबित हो रही है। आड़े-टेढ़े बॉडी पोश्चर में लोग घंटों सोशल मीडिया देखते रहते हैं। लगातार गलत शारीरिक स्थिति में बैठने से कई हड्डियों से जुड़ी समस्याएं पैदा हो रही हैं। सोशल मीडिया अपडेट्स देखते हुए लोग कुछ न कुछ लिखते भी हैं। गलत पोश्चर में टाइपिंग करने से 'टेक्स्ट नेक' की परेशानी बढ़ रही है। ध्यान रहे कि इंसानी शरीर पर अपने सिर का वजन 4.5 किलो से 5.4 किलो तक होता है। लेकिन फोन देखने के लिए गर्दन झुकाने पर ग्रैविटी के कारण सिर पर पड़ने वाला भार करीब 27 किलो तक हो जाता है। फोन को हरदम हाथ में थामे रहने से कलाई और स्क्रॉलिंग से अंगूठे में दर्द और नर्व्स में सुन्नपन की तकलीफ भी होने लगती है।

शारीरिक निष्क्रियता

हाल के वर्षों में सोशल मीडिया पर बीत रहे समय ने हर एजग्रुप के लोगों की फिजिकल एक्टिविटी कम कर दी है। इससे कम उम्र में ज्वॉइंट पेन और शरीर की जकड़न जैसी परेशानियां आ रही हैं। असल में हड्डियों के ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ना जकड़न और दर्द का अहम कारण होता है। फिजिकली एक्टिव ना रहना इस परेशानी को बढ़ाता है। बफेलो यूनिवर्सिटी की स्टडी के अनुसार सोशल मीडिया का हद से ज्यादा इस्तेमाल से सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ सकता है। यह स्थिति ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ने से जुड़ी है। सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ना शारीरिक अंगों में दर्द ही नहीं हृदय रोग और मधुमेह जैसी गंभीर हेल्थ इश्यूज की जड़ भी बन सकता है। देखने में आ रहा है कि पल-पल सामने आती रील्स, मीम्स देखते हुए गुजर रहा समय बेवजह की व्यस्तता का कारण बन गया है। इसके कारण लोगों में मोटापा भी बढ़ रहा है। शारीरिक छवि के मोर्चे पर सोशल मीडिया में दिखती तस्वीरों और वीडियोज के कारण बच्चों से लेकर बड़ों तक, अपने ही शरीर की बनावट के प्रति नापसंदगी की सोच भी आ रही है। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बीत रहे समय को सीमित करना आवश्यक है। साथ ही समय-समय पर ब्रेक लेना और स्मार्ट गैजेट्स इस्तेमाल करते हुए बॉडी पोश्चर को सही रखना भी अहम है। *

बिगड़ रही मानसिक सेहत

सोशल मीडिया एडिक्शन का हमारी मेंटल हेल्थ पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे स्ट्रेस, डिप्रेशन, एंग्जाइटी और चिड़चिड़ेपन की समस्याएं लोगों में काफी बढ़ने लगी हैं। लोग घर में रहते हुए भी एक दूसरे से कम बात करते हैं। सोशल इंटरेक्शन कम होता जा रहा है। अपनी रियल लाइफ के बजाय वर्चुअल लाइफ को इंप्रेसिव बनाने के ज्यादा प्रयास किए जाते हैं। इससे स्ट्रेस का स्तर बढ़ता है। ऐसे में सोशल मीडिया का कंट्रोल्ड यूज करना मेंटल हेल्थ के लिए भी बहुत जरूरी है।

टेक्नोबिहेवियर
नौशाबा परवीन

सोशल मीडिया यूजर्स
एटिकेट्स का रखें ध्यान

लगभग दो दशक की अपनी विकास यात्रा में सोशल मीडिया ने समाज के बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित किया है। लेकिन इसके पॉजिटिव यूज के साथ जमकर मिसयूज भी किया जाता है। इसके एटिकेट्स के बारे में न केवल आपको पता होना चाहिए, उसे फॉलो भी करना चाहिए।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि सोशल मीडिया ने लोगों के परिवार, दोस्तों और दुनिया के साथ बातचीत, संवाद और साझा करने के तरीकों को नए सिरे से परिभाषित किया है। हमारे जीवन में सोशल मीडिया के महत्व का अंदाजा दो मुख्य बातों से लगाया जा सकता है। एक, संकोची स्वभाव के जो लोग महफिलों में कुछ कह नहीं पाते थे, वह भी सोशल मीडिया पर खुलकर अपने विचार रखते हैं बल्कि अपनी हर बात कह लेते हैं, क्योंकि यह माध्यम 'पर्दे के पीछे' से भी अपने विचार (अच्छे या बुरे) व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। दूसरा यह कि सोशल मीडिया के जरिए राजनीतिक दलों से लेकर आम आदमी तक लोगों को इंफ्लुएंस (प्रभावित) करने का प्रयास करते हैं। इस वजह से इंफ्लुएंसर्स की एक नई जमात खड़ी हो गई है, विशेषकर इसलिए कि सोशल मीडिया, कंटेंट क्रिएटर्स को अच्छा पैसा कमाने का मौका भी देता है। इन महत्व के चलते मां दिवस, पिता दिवस आदि की तरह हर साल 30 जून को सोशल मीडिया दिवस भी मनाया जाने लगा है, जिसकी शुरुआत 2010 में मेंशेबल ने की थी।

ऐसे होता गया पॉपुलरः सोशल मीडिया के पॉपुलर होने का सिलसिला 2002 में फ्रेंडस्टर और 2003 में माईस्पेस के लांच होने से शुरू हुआ और इसके बाद 2004 में सोशल मीडिया के सबसे पॉपुलर प्लेटफॉर्म फेसबुक की स्थापना हुई। ट्विटर (जो अब एक्स हो गया है) ने हमें संक्षिप्त होने के लिए प्रोत्साहित किया कि 140 से कम अक्षरों में ही अपने विचार व्यक्त करने हैं। जिसे बाद में बढ़ाकर 280 कर दिया गया। इंस्टाग्राम और फ्लिकर ने ऐसी इमेजरी के जरिए खुद को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया, जिसे हम संभाल सकते हैं। अगर वीडियो की बात करें तो टिक-टॉक और यू-ट्यूब मौजूद हैं। अभिव्यक्ति के लिए जब इतने मंच हों तो सोशल मीडिया दिवस मनाना आसान हो जाता है कि अपने पसंदीदा प्लेटफॉर्म पर कुछ पोस्ट किया जाए, मीम शेयर किए जाएं या किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ें जिससे लंबे समय से बात नहीं हुई है। अब तो अलग-अलग शहरों में सोशल मीडिया मीटिंग्स के जरिए भी इसकी पॉपुलैरिटी का जश्न मनाया जाता है।

होता है भरपूर मिसयूजः कोई चीज कितनी ही अच्छी क्यों न हो, उसका एक बुरा पहलू भी होता है। सोशल मीडिया भी इसका अपवाद नहीं है। अपने फॉलोवर्स बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक कंटेंट क्रिएटर्स फेक न्यूज, क्लिक बेट (यानी वीडियो पर ऐसा थंब नेल लगाना, जिसका कंटेंट में जिक्र ही न हो) आदि का प्रयोग करते है। गलत धार्मिक या जातिगत आधारित कंटेंट से लोगों की भावनाओं को भी ठेस पहुंचाया जाता है। सोशल मीडिया पर झूठ बहुत बड़ा कारोबार है। इसे रोकने के लिए नियम और कानून अवश्य हैं, लेकिन इनका उल्लंघन भी काफी किया जाता है। साथ ही सरकारें और सामाजिक-राजनीतिक संगठन भी कंटेंट को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। अनेक कंटेंट क्रिएटर्स को जेल की हवा तक खानी पड़ी है। दुखद है कि महिलाओं को भी सोशल मीडिया के जरिए तरह-तरह से परेशान किया जाता है। कभी धमकी देकर, कभी ब्लैक मेलिंग, कभी धोखेबाजी में फंसाकर तो कभी उनके द्वारा पोस्ट किसी कंटेंट के लिए ट्रोलिंग के जरिए उन्हें प्रताड़ित करने का ट्रेंड काफी बढ़ गया है। चिंताजनक यह है कि कई बार तो कुछ लोग इतने असहनशील हो जाते हैं कि किसी कंटेंट के लिए हत्या करने जैसा जघन्य अपराध भी करने से नहीं कतराते। इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने और तकनीक के इतने विकसित दौर में समाज की ऐसी संकीर्ण सोच, विचारणीय है। सोशल मीडिया दिवस का जश्न मनाना तब ही अच्छा और सार्थक लगेगा, जब हम प्रण लें कि महिलाओं की ऑनलाइन ट्रोलिंग नहीं करेंगे और उनके विरुद्ध किसी भी तरह की हिंसा और अपराध का विरोध करेंगे।

ना भूलें ये एटिकेट्सः सोशल मीडिया का पॉजिटिव यूज करने के लिए उसे ऑपरेट करते समय इसके कुछ एटिकेट्स को याद रखा जाना चाहिए। जैसे-ऑनलाइन बातचीत करते समय अपनी रियल आइडेंटिटी में रहें। किसी से फ्रेंडशिप करने के लिए पहले उसके विचारों को कंटेंट को समझें, लाइक करें, कमेंट करें फिर दोस्ती की तरफ आगे बढ़ें। ऑनलाइन चैटिंग करते समय विनम्र और पेशेवर लहजे का प्रयोग करें। ऑनलाइन कंटेंट साझा करते समय मूल स्रोत की विश्वसनीयता को परख लें। *

कविता
हरीश कुमार 'अमित'

सब्र

मुश्किल यही है कि
होता जा रहा है सब्र
कम, और कम।
किसी बड़ी बात के लिए
सब्र खो देने की बात
तो आती है समझ,
मगर कई बार तो
खो बैठता है सब्र कोई आदमी
बिल्कुल छोटी-सी बात पर ही।
रखा जाए सब्र अगर
तो बचा जा सकता है
बहुत-सी उलझनों से।
रखा जाए सब्र अगर
तो सुलझ जाती हैं
कुछ उलझनें
अपने आप ही
वक्त बीतने के साथ-साथ।
वाकई बहुत काम की
चीज है सब्र।

व्यंग्य / संदीप भटनागर

मुर्गे और खंजर

मुर्गों की किस्मत में मुर्गियां कम, खंजर ज्यादा होते हैं। ये खंजर कभी उनकी गर्दन पर होते हैं तो कभी पांव में बंधे। यह समझना आसान है कि दुनिया में पहले मुर्गा आया होगा फिर खंजर।

छुट्टी का दिन होने के नाते सामने वाले मैदान में चहल-पहल कुछ ज्यादा थी। बड़े से मैदान का एक कोना मुर्गेबाजों के लिए रिजर्व रहता है। सामान्य तौर पर यह जगह मुर्गा बाजार के रूप में जानी जाती है, जहां आम दिनों में मुर्गों की खरीद-फरोख्त होती है और छुट्टी के दिन खरीदे गए मुर्गों की जोर-आजमाइश।

लड़ने वाले मुर्गों की कीमत से कई गुना ज्यादा पैसे दांव पर लग जाते हैं।

मेरे लिए यह जानना रोचक था कि जिंदा रहते हुए लड़ते मुर्गे देश की जी.डी.पी. में कितना योगदान करते हैं? मुर्गा बाजार में खंजर बेचने वाला भी बैठता है। आम दिनों में उसके पास सामान्य खंजर होते हैं लेकिन मुर्गेबाजी वाले दिन उसके पास मुर्गों के पांव में बांधने वाले विशेष खंजर होते हैं। मुर्गों के मालिक से लेकर दांव लगाने वाले तक अपनी पसंद के मुर्गों के लिए एक से एक कातिल खंजर खरीदते हैं ताकि वो प्रतिद्वंद्वी मुर्गे को ज्यादा से ज्यादा चोटिल कर मुकाबला जीत सके।

जी-जान से लड़ने वाले मुर्गे यह नहीं जानते कि जिबह तो हारने वाले और जीतने वाले दोनों मुर्गों को होना ही है। किसी को आज तो किसी को कल। इस मुकाबले में लड़ाने वालों की अपनी साख और प्रतिष्ठा दांव पर लगी होती है और तमाशबीनों का पैसा, जबकि लड़ने वाले मुर्गों की अपनी जान दांव पर लगी होती है। पूरे तमाशे में खंजर बेचने वाले के खंजरों की मारक क्षमता भी दांव पर लगती है। जितना मारक खंजर उतनी ज्यादा डिमांड।

बावजूद इसके इस पूरे खेल में हमेशा खंजर बेचने वाला ही फायदे में रहता है। वह खंजर हारने वाले को भी बेचता है, जीतने वाले को भी बेचता है और दांव लगाने वालों को भी। मुर्गेबाजी का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है। इंसान ने अपने मनोरंजन के लिए मुर्गों को लड़ना सिखाया था। मानव सभ्यता के विकास के साथ मुर्गेबाजी के इस तरीके को क्रूर मानते हुए इसे असभ्य करार दे दिया गया। विकसित होती दुनिया में इसे अब नए ढंग से खेला जाने लगा। नवीन खेल में मुर्गों को मुर्गे होने का अहसास नहीं होने दिया जाता। लगातार उन्हें ऐसा महसूस कराया जाता है कि तुम्हारे अस्तित्व के लिए तुम्हें लड़ना जरूरी है। नवीन खेल में कमजोर मुर्गों पर भी दांव लगाया जाने लगा, जिन्हें विकसित भाषा में इन्वेस्टमेंट कहा जाने लगा। उनके माध्यम से आधुनिक खंजरों का परीक्षण कर दुनिया में दूसरे मुर्गों को बेचा जाने लगा। कुछ मुर्गों को अत्याधुनिक खंजरों से लैस कर इतना शक्तिशाली बना दिया गया कि वो अब अपने मालिक के इशारे पर लड़ने के बहाने तलाश कर किसी भी मुर्गे से लड़ने को तैयार रहते हैं।

खंजर के सौदागरों ने पूरी दुनिया को मुर्गेबाजी का अखाड़ा बना दिया। खेल में रोज हलाक होने वाले जानवर नहीं इंसान हैं इसलिए इस नए खेल पर दुनिया का कोई भी पशु क्रूरता अधिनियम लागू नहीं होता।

इस नए खेल में आज भी पुराने खेल के कुछ नियम लागू हैं। यह खेल अभी भी मालिकों की प्रतिष्ठा और ईगो के लिए खेला जा रहा है। इस खेल में आज भी खंजर के सौदागर नफे में हैं। वे कमजोर और शक्तिशाली दोनों मुर्गों को अपने खंजर बेच कर मुनाफा पीट रहे हैं। आज भी जिंदा लड़ते मुर्गे खंजर बनाने वाले मालिकों के देश की जी.डी.पी. को बढ़ा रहे हैं और जो मुर्गे लड़ नहीं रहे हैं, वो अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। *

लघुकथा
अशोक वाधवाणी

दिव्यांग का सम्मान

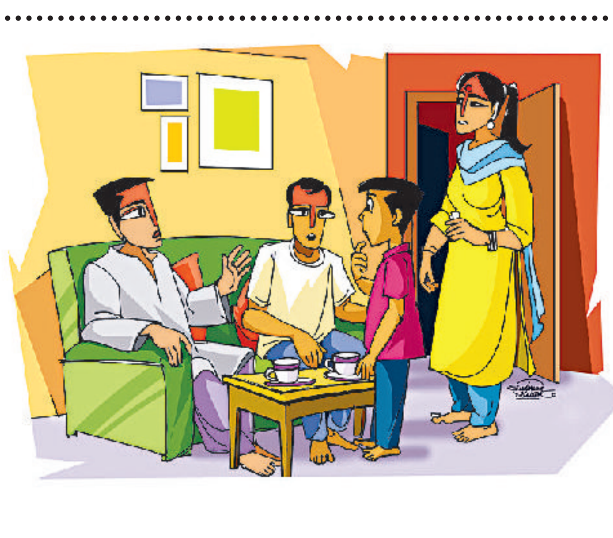

आलोक किसी काम के सिलसिले में एक जान-पहचान वाले दंपती के घर पहुंचे। औपचारिक अभिवादन और चाय-पानी के बाद उनसे बातचीत में व्यस्त हो गए। इतने में छठी कक्षा में पढ़ने वाला उनका बेटा बाहर से घर के अंदर आया। वह सीधे ड्रॉइंग रूम में पहुंचा जहां आलोक उसके मम्मी-पापा के साथ बैठे थे। आते ही उसने अपनी मां के हाथ में दो सौ रुपए का नोट पकड़ाते हुए बोला, 'मम्मी, वो जो पड़ोस में अंधी खुशबू दीदी रहती हैं न, उन्होंने ये पैसे दिए हैं।'

किसी दिव्यांग के बारे में इस तरह के बोल सुनकर आलोक को बहुत बुरा लगा। उसने बच्चे को प्यार से समझाया, 'देखो बेटा, किसी की शारीरिक कमजोरी का ऐसे मजाक नहीं उड़ाते हैं। विकलांग लोगों को आजकल दिव्यांग कहकर पुकारा जाता है, यह एक पॉजिटिव सोच की निशानी है। संबोधन बदलने के बाद भी लोगों के व्यवहार में कोई सुधार नहीं हुआ है, जो गलत बात है। उसके माता-पिता ने बड़े चाव से अपनी बेटी का सुंदर सा नाम रखा होगा खुशबू! बेटा, तुम्हें हर किसी दिव्यांग का नाम पूरे मान-सम्मान के साथ लेना चाहिए। सिर्फ खुशबू दीदी भी तो कह सकते थे।'

'हमारे घर में सभी उन्हें अंधी खुशबू ही तो कहते हैं।' बच्चे ने बड़े भोलेपन से बताया।

आलोक ने दंपती की ओर देखा, वे दोनों उससे नजरें नहीं मिला पा रहे थे। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

बहुरंगी गजलों का कोलाज

वेद मित्र शुक्ल दिल्ली विवि में अंग्रेजी पढ़ाते हैं लेकिन वे अंग्रेजी के साथ ही हिंदी साहित्य में रचनात्मक रूप से काफी सक्रिय हैं। इसका प्रमाण हैं, कई विधाओं में प्रकाशित उनकी मौलिक और संपादित ढेरों पुस्तकें। कुछ समय पहले उनका दूसरा गजल संग्रह 'दरिया की बातें पत्थर से' प्रकाशित हुआ है। इसमें उनकी गजलगोई के कई आयाम देखे जा सकते हैं। समय, समाज और जीवन के बेशुमार स्याह-श्वेत पहलू इन गजलों में उजागर हुए हैं। कहीं वे बढ़ते शहरीकरण के चलते बिखरते रिश्तों की टीस बयां करते हैं, *'गांवों से आ बसे शहर में खोए हैं सब रिश्ते नाते/गीतों में ही देवर-भाभी, जीजा-साली होली खेलें।'* तो कहीं समाज में छीजती जा रही मनुष्यता को लेकर वह अपनी चिंता ऐसे प्रकट करते हैं, *'तिल रखने की जगह नहीं पर/ अच्छे लोग बहुत ही कम हैं।'* इसी तरह वे राजनीतिज्ञों के चारित्रिक अवमूल्यन को बेबाकी से बयां करते हैं, *'गांधी का इक दौर रहा था/घिन आती है अब खद्दर से।'* यानी जीवन के लगभग हर पक्ष पर वे गहरी नजर रखते हैं और अपने जज्बातों को बयां करने के लिए सटीक तासीर के शब्दों को गजल में पिरो देते हैं।

कह सकते हैं यह किताब वेद मित्र शुक्ल की बहुरंगी गजलों के कोलाज जैसी है। *

पुस्तकः दरिया की बातें पत्थर से (गजल संग्रह)
लेखकः डॉ. वेद मित्र शुक्ल, **मूल्यः** 290 रुपए,
प्रकाशकः सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति का अनूठा केंद्र है अलाप्पुझा। बैकवाटर्स पर्यटन, यहीं नहीं पूरे केरल की पहचान है। यहां का मोहक प्राकृतिक सौंदर्य, इसकी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विशिष्टता में चार चांद लगा देता है। यही वजह है कि मानसून में इस जगह का आनंद लेने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आते हैं।

इस मानसून में घूम आएं भारत के वेनिस अलाप्पुझा

टूरिस्ट स्पॉट / लोकमित्र गौतम

कोई शहर छोटा हो या बड़ा या चाहे कोई कस्बा ही क्यों न हो, हर शहर, हर महानगर और हर कस्बे की अपनी एक निजी पहचान, एक निजी विशेषता होती है, जो हर दूसरी जगह से अलग होती है। यही उस जगह की पहचान होती है, उसका लैंडमार्क कहलाता है। भारत के वेनिस कहे जाने वाले शहर अलाप्पुझा को 'बैकवाटर्स का स्वर्ग' कहा जाता है। यही यहां का लैंडमार्क माना जाता है।

घूमने के लिए बारिश है बेस्ट: भारत दुनिया के उन गिने-चुने देशों में से एक है, जहां हर मौसम के लिए विशिष्ट पर्यटन क्षेत्र को मुफीद माना जाता है। अगर भारत के पहाड़, गर्मियों में घूमने के लिए स्वर्ग हैं और भारत के समुद्रतट सर्दियों की गरमाइश भरी पसंदीदा जगहें हैं तो मानसून में घुमक्कड़ी का लुत्फ लेने के लिए केरल, पर्यटन का स्वर्ग कहा जाता है। लेकिन इस केरल में भी एक खास पर्यटन क्षेत्र है, अलेप्पी या अलाप्पुझा जिसे भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहा जाता है। इसे पूर्व का वेनिस भी कहते हैं। यहां के हाउसबोट (कुट्टनाड क्षेत्र में) पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

इसलिए अलाप्पुझा है विशिष्ट: केरल में यूं तो पूरे प्रदेश में ही बैकवाटर्स के अदभुत नजारे हैं- झीलें, नहरें, नदी तंत्र और तटीय लैगून ये सब मिलकर केरल को एक अद्भुत जल प्रदेश बनाते हैं। लेकिन केरल में भी जिस शहर को बैकवाटर्स स्वर्ग के नाम से जानते हैं, वो है- अलेप्पी या अलाप्पुझा। आज के अलाप्पुझा को अंग्रेजों के जमाने में अलेप्पी कहा जाता था। यह केरल के ऐतिहासिक नगरों में से एक है और इसे भारत के वेनिस होने का दर्जा हासिल है। अलेप्पी भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि यहां की सुंदर झीलों और जलमार्गों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका एक गहरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी है।

भौगोलिक स्थिति भी है अलग: अलेप्पी

की भौगोलिक स्थिति भी इसे भारत का एक विशिष्ट शहर बनाती है। यह ऐतिहासिक शहर अरब सागर के किनारे स्थित है और इसके आस-पास की जमीन नदियों, नहरों, लैगून और झीलों से अटी पड़ी है। इस क्षेत्र को पहले कुट्टनाड के नाम से भी जाना जाता था, जो चावल की खेती और अपने जल परिवहन के लिए सदियों से प्रसिद्ध रहा है।

कम नहीं ऐतिहासिक महत्ता: प्राचीनकाल में यह क्षेत्र केरल के चेर साम्राज्य के अधीन था, तब यहां के राजा जलमार्गों को नियंत्रण करते थे, जो व्यापार के मुख्य साधन थे। दक्षिण भारत के अन्य भागों से मसालों, नारियल और अन्य उत्पादों का आदान-प्रदान इन्हीं जलमार्गों के जरिए होता था। लेकिन 18वीं और 19वीं शताब्दी में अलेप्पी एक प्रमुख बंदरगाह शहर के रूप में विकसित हुआ। जब केरल के प्रमुख बंदरगाह कोडुंगल्लूर में बाढ़ और भू-स्खलन के कारण व्यापार पूरी तरह से बाधित हुआ, तब तत्कालीन त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा और उनके उत्तराधिकारियों ने अलेप्पी को नया व्यापारिक केंद्र बनाने का निर्णय लिया। राजा मार्तंड वर्मा और उनके दीवान वेल्लुथंपी की इसमें निर्णायक भूमिका थी। उन्होंने यहां कृत्रिम नहरों और जलमार्गों का जाल बिछवाया ताकि नौकाओं और व्यापारिक जहाजों को यहां प्रवेश में सुविधा हो। यही वह समय था, जब अलेप्पी को भारत का वेनिस कहा जाने लगा। अलेप्पी धीरे-धीरे कपड़ों, मसालों, नारियल और चावल का प्रमुख निर्यातक केंद्र बन गया।

पहचान हैं अनोखी हाउसबोट्स: बैकवाटर्स यानी झीलें, नहरें और समुद्र से बने जलमार्ग, यहीं तो अलेप्पी की आत्मा हैं। यहां की प्रमुख झील वेंबनाड झील है, जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झीलों में से एक है। जब अलेप्पी का धीरे-धीरे बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकास होने लगा, तो यहां बड़े पैमाने पर पारंपरिक हाउसबोट, जिन्हें मलयालम भाषा में कैट्टुवल्लम कहा जाता है, विकसित होने लगे। ये कैट्टुवल्लम एक जमाने में बड़ा सा जहाज हुआ करता था, जिसने बाद में आधुनिक हाउसबोट का रूप ले लिया। आज अलेप्पी की पहचान इन्हीं हाउसबोट की वजह से है। अलेप्पी के ये हाउसबोट लकड़ी, नारियल की रस्सियों और केले के पेड़ों के पारंपरिक साधनों से बने होते हैं। इनमें अद्भुत स्थानीय कलाकारों को विभिन्न कलाकृतियों के रूप में देखा जा सकता है। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण आज अलेप्पी भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लग्जरी पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हुआ है।

टूरिस्ट सेंटर के रूप में विकसित: सन 1990 के दशक में अलेप्पी को नए सिरे से एक बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया गया। केरल की सरकार और यहां के स्थानीय लोगों ने पारंपरिक नावों को पर्यटकों के लिए हाउसबोट में बदला और आज अलेप्पी हाउसबोट टूरिज्म, आयुर्वेदिक स्पा, बर्ड वाचिंग और फिशिंग विलेज विजिट जैसी पर्यटन गतिविधियों के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। अलेप्पी के बैकवाटर्स का अनुभव केवल एक सौंदर्य नहीं बल्कि स्थानीय जीवनशैली, भोजन, जल परिवहन और प्रकृति के संतुलन को महसूस कराने वाली संस्कृति है। इसीलिए अलेप्पी को केरल के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहते हैं। *

होता है हर वर्ष बोट्स रेस का आयोजन

हर साल अगस्त माह में यहां पुनमड़ा झील में नेहरू ट्रॉफी बोट रेस आयोजित होती है, जिसमें सैकड़ों लोग चुंदवल्ली यानी सांप जैसी मुंह वाली लंबी नावों पर सवार होकर रेस में शामिल होते हैं। यह रेस केवल खेल नहीं होती बल्कि केरल की समृद्ध संस्कृति का एक अनोखा उत्सव है। यह रेस 1952 में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की यहां यात्रा के दौरान आरंभ हुई थी।

हाल में ही कश्मीर स्थित चिनाब नदी पर बने चिनाब ब्रिज की डिजाइन और तकनीकी विशेषताओं ने इसे दुनिया भर में चर्चा का विषय बना दिया है। इस ब्रिज की विशेषताओं पर एक नजर।

इंजीनियरिंग का नायाब नमूना चिनाब ब्रिज

अचीवमेंट / सुनील कुमार महला

चिनाब ब्रिज : दुनिया का सबसे बड़ा आर्च ब्रिज

हाल ही में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर में नवनिर्मित चिनाब पुल का उद्घाटन किया। यह (चिनाब पुल) दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल है।

ब्रिज की खासियतें: चिनाब ब्रिज स्टील और कंक्रीट से बना आर्च ब्रिज है, जो रियासी जिले के बक्कल और कौरी गांवों को जोड़ता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह नदी के तल से 359 मीटर (लगभग 1,178 फीट) ऊंचा है। यानी यह पेरिस के मशहूर एफिल टॉवर से 35 मीटर और दिल्ली की कुतुब मीनार से करीब 5 गुना ऊंचा यानी कि 287 मीटर ऊंचा है। यह 266 किमी प्रति घंटे तक की हवा की गति का सामना कर सकता है। यह ब्रिज भूकंपीय क्षेत्र पांच में स्थित है इसलिए इसे इतना मजबूत बनाया गया है कि रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता के भूकंप को भी सहने में सक्षम है। यही नहीं इसे 40 टन टीएनटी के बराबर विस्फोट सहने में सक्षम बनाया गया है। इसमें ऐसे खास जंगरोधपेंट का इस्तेमाल किया गया है, जो इसे 20 साल तक जंग से बचाएगा। पुल में ऐसी तकनीक स्थापित की गई है कि कोई भी खतरा होने पर वार्निंग अलार्म खुद ही बजने लगेगा। पुल में 112 सेंसर लगाए गए हैं, जो हवा की गति, टेंपरेचर और कंपन आदि की जानकारी देंगे।

सवा सौ साल है उम्र: 1315 मीटर लंबा यह ब्रिज, उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक (272 किमी. लंबा) प्रोजेक्ट का हिस्सा है। इस पुल का निर्माण 1486 करोड़ की लागत से किया गया है। इस ब्रिज की नींव 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रखी थी। इसके निर्माण में 22 साल लगे और इसकी अनुमानित उम्र 120-125 साल है।

निर्माण में प्रयुक्त सामग्री: जानकारी के मुताबिक, इस ब्रिज को बनाने में 28,660 से 30,000 मीट्रिक टन स्टील का इस्तेमाल किया गया है। इसके साथ ही 46,000 क्यूबिक मीटर कंक्रीट का भी यूज हुआ है। इसके निर्माण में 6 लाख से ज्यादा नट बोल्ट भी यूज किए गए हैं। यह भी काबिले-तारीफ है कि इस पुल को बनाने में नदी के प्रवाह में अवरोध नहीं पहुंचाया गया है, नदी में कोई पिलर नहीं लगाया गया है, बल्कि इसे आर्च तकनीक से बनाया गया है। इस पुल को किसी हमले से बचने के लिए ब्लास्ट प्रूफ स्टील से तैयार किया गया है। इस ब्रिज के निर्माण में डीआरडीओ की अचूक प्लानिंग शामिल रही है। इसे बनाने के लिए उत्तर रेलवे के साथ कोंकण, अफकान और केआरसीएल ने काम किया। इसके साथ ही भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण जैसी संस्थाएं भी जुड़ी रहीं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसमें आईआईटी रुड़की और आईआईटी दिल्ली ने भी अपना योगदान दिया है।

कई तरह से महत्वपूर्ण: यह अनोखा पुल न सिर्फ कश्मीर घाटी को पूरे भारत से जोड़ेगा, बल्कि क्षेत्र में व्यापार, पर्यटन और औद्योगिक विकास को भी नई गति देगा। चिनाब ब्रिज, दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। चिनाब रेलवे ब्रिज को बनाने में भले ही 22 साल लगे हों, लेकिन अब इसके शुरू होने के बाद कश्मीर घाटी और जम्मू के बीच सीधा रेल रास्ता बन जाएगा। यह पहली बार होगा जब लोग कन्याकुमारी से सीधे ट्रेन के जरिए कश्मीर घाटी तक जा सकेंगे। यह ब्रिज भी अपने आप में एक आकर्षक टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन गया है। इससे देश की सैन्य ताकत को भी कहीं न कहीं सपोर्ट मिलेगा, क्योंकि बर्फबारी के दिनों में कई बार कश्मीर से संपर्क कट जाता था। साथ ही कई क्षेत्रों में आपात स्थिति में सेना को अपनी मूवमेंट में इस बर्फबारी के समय काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। अब चिनाब रेलवे ब्रिज के निर्माण से हर मौसम में कश्मीर पहुंचना सेना के लिए आसान हो जाएगा। साथ ही जम्मू-कश्मीर आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होगा यह अनोखा चिनाब ब्रिज। *

पास में है अनोखा अंजी ब्रिज

6 जून 2025 को ही चिनाब पुल का उद्घाटन करने के बाद प्रधानमंत्री ने इसी रेल ट्रैक पर बने अंजी ब्रिज का भी लोकार्पण किया। यह देश का पहला ऐसा रेलवे ब्रिज है, जो केबल स्टेंड तकनीक पर बना है। रिपोर्ट्स के अनुसार यह पुल नदी तल से 331 मीटर की ऊंचाई पर बना है। 1086 फीट ऊंचा एक टावर इसे सहारा देने के लिए बनाया गया है, जो करीब 77 मंजिला बिल्डिंग जितना ऊंचा है। यह ब्रिज अंजी नदी पर बना है, जो रियासी जिले के कटरा को बनिहाल से जोड़ता है। चिनाब ब्रिज से इसकी दूरी महज 7 किमी है। इस पुल की लंबाई 725.5 मीटर है। इसमें से 472.25 मीटर का हिस्सा केबल्स पर टिका हुआ है।

शारीरिक-आर्थिक सेहत सुधारे सेब

उपयोगी पेड़ / वीना गौतम

भारत में सेब अभिजात्य फलों में से एक माना जाता है। डॉक्टर भी हर किसी को, रोगों से बचने के लिए रोज एक सेब खाने की सलाह देते हैं। सेब के स्वास्थ्य संबंधी फायदों की वजह से इसकी मांग हमेशा, हर मौसम में बनी रहती है। यही कारण है कि सेब प्रायः महंगा ही बिकता है। जाहिर है, सेब की खेती आर्थिक दृष्टि से किसानों के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है।

कहां होती है सेब की खेती: भारत में सेब के पेड़ मुख्यतः पर्वतीय और ठंडी जलवायु वाले इलाकों में उगते हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन और कृषि क्षेत्र में हुए तमाम तकनीकी उन्नति के कारण अब सेब मैदानी राज्यों में भी किसानों द्वारा उगाया जा रहा है। देश में पारंपरिक रूप से सेब का उत्पादन हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और सिक्किम जैसे राज्यों के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सदियों से होता रहा है। लेकिन अब हिमालय से सटे मैदानी राज्यों जैसे- पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में भी सेब की कुछ प्रजातियां उगाई जा रही हैं।

सेहत के लिए गुणकारी: सेब में कई तरह के विटामिंस, मिनरल्स, एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। यह अनेक रोगों से बचाता है और शरीर को पोषण देता है। कहावत भी है कि रोज एक सेब खाइए, रोगों से दूर रहिए।

किसानों के लिए फायदेमंद: सेब एक नकदी फसल है। यह किसान के लिए ही आर्थिक सहायता नहीं पहुंचाता, बल्कि आम कृषि मजदूरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करता है। सेब की बागवानी में पौधा रोपण से लेकर उसकी कटाई, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकिंग और परिवहन तक में कई लोगों को रोजगार मिलता है।

अनुमानित आमदनी: सेब का बगीचा 5 से 7 साल में फल देना शुरू कर देता है। सेब के एक पेड़ से किसान को हर साल 100 से 200 किलो फल मिल जाते हैं। औसतन एक हेक्टेयर सेब का बगीचा हर साल लगभग 15 टन उपज देता है, जिससे किसान को सारे खर्च निकालकर 10 से 15 लाख रुपए तक का फायदा हो सकता है। लेकिन इसके लिए पहले किसान को हर साल सेब के बागीचे में 4 से 5 लाख रुपए खर्च करने पड़ते हैं। बाजार चाहे कितना भी डाउन हो, सेब की खेती किसानों को फायदा ही पहुंचाती है। *

बुरे सपनों को दूर रखे लकी चार्म ड्रीम कैचर

रोचक / शिखर चंद जैन

आपने गिफ्ट शॉप, ऑनलाइन शॉपिंग साइट्स या छोटे बच्चों के पालने पर लगे ड्रीम कैचर्स जरूर देखे होंगे। यह एक छोटा सा वृत्ताकार फ्रेम (हूप) होता है, जिसमें मकड़ी के जाल की तरह धागों से बुनी हुई आकृति होती है, कुछ मोती होते हैं और पंख (फेदर्स) लटके हुए होते हैं। यह सिर्फ सजावट की वस्तु नहीं है, इसे वास्तुशास्त्र में भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

कैसे हुई शुरुआत: ड्रीम कैचर का आविष्कार करने का श्रेय अमेरिकी जनजाति ओजिब्वे (चिप्पेवा) के लोगों को जाता है। इस जनजाति के लोग कनाडा और नॉर्थ अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में रहते हैं। ओजिब्वे जनजाति के लोगों की मान्यता थी कि उनके सभी बच्चों और बड़ों की सुरक्षा असिबाइकाशी नामक एक रहस्यमयी स्पाइडर वूमेन करती है। जब इस जनजाति के लोगों की आबादी बढ़ने लगी और वे दूर-दूर तक जाकर रहने लगे, तो असिबाइकाशी ने स्पाइडर वेब के साथ एक जादुई यंत्र/ताबीज तैयार किया और अपने-अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा के लिए ओजिब्वे समुदाय की महिलाओं को भी यह यंत्र बनाना सिखाया। उस यंत्र को ही आज वास्तु और फेंगशुई की दुनिया में 'ड्रीम कैचर' के नाम से जाना जाता है।

तेजी से हुआ पॉपुलर: ओजिब्वे जनजाति के लड़के और लड़कियों के विवाह में अन्य वस्तुओं के साथ ड्रीम कैचर्स का भी आदान-प्रदान किया जाने लगा। नतीजतन ड्रीम कैचर का प्रचलन दूसरी जनजातियों, जैसे लकोटा जनजाति आदि में भी बढ़ने लगा। धीरे-धीरे ड्रीम कैचर विभिन्न अमेरिकी जातियों/समुदायों के साथ-साथ अन्य सभ्यताओं-संस्कृतियों में भी लोकप्रिय होने लगा।

ड्रीम कैचर के पार्ट्स: ड्रीम कैचर में मुख्य रूप से एक वृत्त, धागों से बुना जाल, बीड और फीदर्स होते हैं। हर तत्व का अपना महत्व और प्रतीक है।

जीवन चक्र का प्रतीक वृत्त (हूप): यह हमारे जीवन चक्र का प्रतीक माना जाता है। यह भी मान्यता है कि यह वृत्त सूर्य और चंद्र का प्रतिनिधित्व करता है।

बुरे सपनों को ट्रैप करता जाल (वेब): जैसे मकड़ी अपने जाल में शिकार फंसा लेती है, वैसे ही ड्रीमकैचर का वेब बुरे सपनों को जाल में फंसा लेता है। बीचों-बीच जो छेद होता है, वह अच्छे सपनों के प्रवेश द्वार की तरह काम करता है।

सपनों की सीढ़ी पंख (फेदर): ड्रीम कैचर में लगे पंख को अच्छे सपनों का वाहक या अच्छे सपनों की सीढ़ी माना जाता है। आजकल पक्षियों के पंख के स्थान पर जेमस्टोन भी लगाए जाते हैं।

मकड़ी और बुरे सपने हैं बीड: ड्रीम कैचर के बीच मे लगा सिंगल बीड मकड़ी का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि इसके इर्द-गिर्द लगे मल्टीपल बीड्स पकड़े गए बुरे सपनों के प्रतीक होते हैं।

लकी चार्म बना ड्रीम कैचर: आज दुनिया के कई देशों में ड्रीम कैचर को माइंडफुलनेस, सुरक्षा और सकारात्मकता के प्रतीक के रूप में सजाया जाता है। लोगों के लिए एक लकी चार्म है ड्रीम कैचर। *

बारिश के मौसम में रिमझिम फुहारों से हर किसी का मन खिल उठता है। इस सुहाने मौसम में काले-काले बादलों से झरती बारिश की बूंदों से भीगी कई यादगार हिंदी फिल्में और कर्णप्रिय गीत कभी भुलाए नहीं जा सकते। ऐसी ही कुछ फिल्मों और सदाबहार गानों पर एक नजर।

फिल्मों-गीतों को खूब भिगोया बारिश की रिमझिम फुहारों ने

सिने जगत / चेतना झा

अपने शुरुआती दौर से ही हिंदी सिनेमा ने बरसात के मौसम की खूबसूरती को पर्दे पर तरह-तरह से पेश किया है। कई फिल्मों के नाम और उनकी कहानी के प्लॉट में बरसात शामिल रही है तो अनेक फिल्मों में बारिश से जुड़े गीतों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। उम्मीदों को बरसती बूंदों के जरिए कभी पर्दे पर दिखाया गया है तो विरह के गीत के लिए भी सावन-भादो का सहारा लिया गया है। खासतौर पर प्रेमी जोड़ों को भिगोने वाले रोमांस के लिए बरसात का मौसम बॉलीवुड में सबसे मुफीद माना जाता रहा है।

पर्दे के बाहर मचलता मन: कभी मशीनी बारिश में शिफॉन की साड़ी पहन कर अपने नृत्य से नायिका के गीत चर्चित हुए तो कभी वास्तविक बारिश में मुंबई की सड़कों पर 'रिमझिम गिरे सावन' जैसे यादगार गीत फिल्माए गए। आज

'आज रपट जाएं' गाने के एक दृश्य में अमिताभ और स्मिता पाटिल

सोशल मीडिया के दौर में बहुत से यंगस्टर्स ऐसे गीतों को रिक्रिएट कर रील्स बनाने के लिए खूब उतावले दिखते हैं। यही तो जादू है बॉलीवुड फिल्मों की बारिश का। नायक-नायिकाओं की प्यार भरी तकरार, इंकार और फिर इजहार की अनगिनत दास्तानें टिप-टिप बारिश के बीच इतने दिलकश अंदाज में फिल्माई जाती रही हैं कि रियल लाइफ में भी कुछ लोग इन्हें खुद अनुभव करने के लिए मचल उठते हैं।

गीतों में उम्मीद-मिलन-विरह: 'पुरवा के झोंकवा से आयो रे संदेसवा कि चल आज देसवा की ओर' हो या 'घनन-घनन घिर आए बदरा...' फिल्मों में भी मानसूनी बादल, उम्मीद-उत्साह का संचार भरपूर करते हैं। 'तुम्हें गीतों में ढालूंगा, सावन को आने दो...' 'मौसम है आशिकाना, ऐ दिल कहीं से उनको ऐसे में ढूंढ लाना...' मिलन और उम्मीद की बूंदों से भीगे ऐसे बेशुमार गाने सिनेप्रेमियों के पसंदीदा गीतों में शामिल हैं। फिल्मों में बारिश का सावन का महीना, न केवल मिलन के गीत गाता है, बल्कि विरह की तान भी छेड़ता है। याद आता है, मोहम्मद रफी का वह गीत, 'अजहू न आए बालमा, सावन बीता जाए।'

बरसात पर केंद्रित फिल्में: कई फिल्में तो बरसात को केंद्र में रखकर ही फिल्माई गईं। कई फिल्मों के नाम ही बरसात और बरसात के प्रमुख महीने सावन से जुड़े हुए हैं। शुरुआत 1945 में आई मोतीलाल और शांता आप्टे की फिल्म 'सावन' से हुई। 1949 में आई राजकपूर की फिल्म 'बरसात' ने तो तय कर दिया कि बरसात फिल्मों की सफलता का अचूक मंत्र है। बाद में बरसात नाम की दो फिल्में और बनीं। इन दोनों के नायक बॉबी देओल थे। 1960 में भारत भूषण और मधुबाला की 'बरसात की रात' आई। 1981 में अमिताभ बच्चन और राखी की हिट जोड़ी से सजी 'बरसात की एक रात' रिलीज हुई। 'बरखा बहार' फिल्म में भी बारिश का रोमांटिक अंदाज नजर आया था। 'मानसून वेडिंग' नाम से भी एक फिल्म काफी चर्चित हुई थी। 'तुम मिले', 'लगान', 'आया सावन झूम के', 'प्यासा सावन', 'सावन की घटा', 'सोलहवां सावन', 'सावन के गीत', 'प्यार का पहला सावन', 'सावन का महीना', 'सावन को आने दो', 'सावन-भादो', इस श्रंखला में कई फिल्में शामिल हैं।

ये गीत भी हैं यादगार: 'प्यार हुआ इकरार हुआ ...' राजकपूर और नरगिस का बारिश के दौरान एक छतरी के नीचे चलते हुए यह गीत गाना, उस जमाने के रोमांस की शायद पराकाष्ठा ही थी। फिल्म 'श्री 420' का यह गाना आज भी मन को प्यार की भावना से भिगो देता है। बरसात, प्रेमियों के लिए कितनी कीमती होती है, यह सरेआम बयां किया फिल्म 'रोटी कपड़ा और मकान' के एक गीत में जीनत अमान ने। जब वो दो टकिए की नौकरी के पीछे लाखों का सावन कुर्बान होने की शिकायत करती हैं। यह जीनत के इस गाने से जाहिर होता है कि 'हाय-हाय ये मजबूरी, ये मौसम और ये दूरी' आज भी कई लोगों को नून-तेल-हल्दी के फेर में गुम हो रहे रोमांस की याद दिला जाता है। इसी तरह मधुबाला और भारत भूषण पर फिल्माया गाना 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात' को भी नहीं भुलाया जा सकता है। इसी तरह 'चांदनी' फिल्म का गाना 'लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है', आज भी दिल को तरंगित कर जाता है।

माना गया हिट फॉर्मूला: दर्शकों द्वारा बारिश पर फिल्माए गीतों को पसंद किए जाने की वजह से कई फिल्मों में तो हिट फार्मूले की तरह बारिश के गाने को फिल्मों में जबर्दस्ती शामिल किया गया। याद कीजिए अमिताभ बच्चन और स्मिता पाटिल पर फिल्माया गया 'नमक हलाल' फिल्म का गाना, 'आज रपट जाएं तो हमें न उठइयो..', जो सुपरहिट रहा था। इसी तरह फिल्म 'गुरु' में 'बरसो रे मेघा...' गाने पर ऐश्वर्या राय ने बेहद दिलकश नृत्य किया था। बरसात के सीन पर फिल्माए ऐसे फेमस गीतों में 'दिल तो पागल है' का गाना 'कोई लड़की है, जब वो हंसती है, बारिश होती है...' फिल्म 'मोहरा' का गाना 'टिप-टिप बरसा पानी', 'फना' का गाना 'ये साजिश है बूंदों की' भी शामिल हैं। इसी कड़ी में याद आता है '1942 ए लव स्टोरी' का गाना 'रिम-झिम रिम-झिम, रुम-झुम रुम-झुम...' कहने का सार है कि बारिश की फुहारों ने हिंदी फिल्मों और गानों को खूब भिगोया है। *